आज की ग़ज़ल

(ग़ज़लों का संग्रह)

शायर : कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक' अकबराबादी

संकलन द्वारा : श्रीमती पूजा सिंह मण्डल

मनसा पब्लिकेशन्स

AAJ KI GHAZAL
By- Krishna Kumar Singh 'Mayank' Akbarabadi

रचनाकार	:	कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक' अकबराबादी ©
कृति का नाम	:	आज की ग़ज़ल
संस्करण	:	प्रथम
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 200.00
पृष्ठ संख्या	:	204
मुद्रक	:	पूजा प्रेस, लखनऊ
ISBN	:	978-93-87915-13-8

प्रकाशक
मनसा पब्लिकेशन्स
2/256, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
यू.पी., भारत, फोन नं0-0522-4029598
Email - manasapublications2007@rediffmail.com
manasapublications2007@gmail.com
www.manasapublications.org

मेरी शोहरत, बुलन्दी और रुतबा,
मेरी माँ की दुआओं का असर है ।।

पूजनीय माताजी स्वर्गीय नारायणी देवी को
समर्पित

शायर के बारे में

अभी जुमा जुमा आठ दिन भी नहीं गुजरे थे हिन्दी वर्णमाला पर आधारित ग़ज़लों के दीवान का लोकार्पण हुए। सवेरे के छह भी नहीं बजे थे, फ़ोन की घंटी बज उठी। बंद आँखों को बहुत मेहनत से खोल कर स्क्रीन पर नाम देखा..... मयंक । दिल धड़क गया और आँखे पूरी तरह खुल गईं। पूछा, ख़ैरियत तो है। जवाब में उन्होंने बताया कि चार-पाँच दिनों में एक दर्जन ग़ज़लें हो गईं हैं। सोचता हूँ एक और ग़ज़ल संग्रह तैयार कर लूँ। ग़ज़लें सुन लो। मैंने पाँच मिनट की मोहलत मांगी और चाय का कप ले कर बैठ गया। ग़ज़लें सुनता रहा और खुद को कोसता रहा कि ऐसी ग़ज़लें मुझसे क्यों नहीं होतीं।

लेखन के प्रति ऐसा उत्साह और जुनून मैंने बहुत कम लोगों में देखा है। 25 किताबें, जिनमें उर्दू और हिन्दी वर्णमाला के दो अलग अलग दीवान भी हों, उसके बाद भी लेखन के प्रति ऐसा अनुराग, उम्र की 70वीं पायदान से ऊपर भी ऐसा जोश, निश्चित ही ऊपर वाले की ख़ास रहमत मयंक साहब की लेखनी पर है।

इस दौर में, जब साहित्य लोगों की नज़र में बेकार सी चीज़ है, साहित्यिक पत्रिकाओं पर अपने अस्तित्व को बचाये रखने और बनाए रखने का संकट है, मयंक साहब का धारा प्रवाह लेखन एक अघोषित युद्ध लगता है। वो कहते हैं "लोगों का सोचना क्या है, इससे मुझे कोई मतलब नहीं। मेरा काम लिखना है, उसे मैं छोड़ नहीं सकता ।"

मयंक साहब की शायरी पर अब मेरा कुछ कहना, सूरज पर टार्च की रोशनी फेंकने जैसा होगा। जिस शायर को हिंदुस्तान की हर भाषा में पढ़ा और छापा जा रहा हो, जिसकी ग़ज़लें देश के नामचीन ग़ज़ल गायक गाते रहते हैं, जिस शायर की पहुँच अमरीका और दुबई तक के मुशायरों में हो, उसके बारे में मैं क्या कहूँ, सिर्फ़ एक सच बयान कर सकता हूं कि....मुझे जलन होती है।

पिछली किताब, जो हिन्दी वर्णमाला पर आधारित विश्व का पहला दीवान थी, उसकी ग़ज़लें अभी तक मेरे होशो-हवास पर बर्फ़ की तरह जमी हुई हैं। इस संग्रह की ग़ज़लों को पढ़ने/सुनने/देखने के बाद ज़हन में एक ही शेर गूँजता है-

''पाते हैं कुछ गुलाब पहाड़ों में परवरिश,
आती है पत्थरों से भी खुशबू कभी कभी''

शायर और फ़नकार तो अपने देश में बहुत हैं लेकिन शायरी की जो ख़ुशबू के. के. सिंह 'मयंक' के कलाम में होती है वो ज़रा अलग एरोमा रखती है। मुझे यक़ीन है, इन ग़ज़लों को पढ़ने के बाद आपको भी यह एहसास होगा कि ग़ज़लें अब ज़मीन से जुड़ गई हैं और उन्होंने ख़्वाबों की वादियों का सफ़र ख़त्म कर दिया है।

मुझे उम्मीद है, मेरी तरह आपको भी यह संग्रह पसन्द आएगा और इसे पढ़ने के फ़ौरन बाद आप एक दूसरे संग्रह की फ़रमाइश भी करते नज़र आएंगे। क्या आप मेरी इस बात से सहमत हैं?

सर्वत जमाल
मो.-7905626983

अपनी बात

कभी सोचता हूँ तो विश्वास नहीं होता । रेलवे की अति व्यस्तता भरी नौकरी, घर परिजन, समाज के प्रति उत्तरदायित्व और 25 पुस्तकों का प्रकाशन, वो भी छन्द-बद्ध कवितओं-गीतों-ग़ज़लों का । इनमें भी एक उर्दू, फ़ारसी लिपि की ग़ज़लों का दीवान, दूसरा हाल ही में प्रकाशित हिन्दी वर्णमाला पर आधारित हिन्दी ग़ज़लों का दीवान । सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्ति के पश्चात आम तौर से लोग व्यायाम, धर्मचर्या, पर्यटन, घर-परिवार को अपना समय समर्पित कर देते हैं, लेकिन यहाँ तो ईश्वर ने मस्तिष्क में कुछ अलग तरह के चिप्स लगा रखे हैं । नौकरी से छुट्टी मिली तो लेखन ने अपना क़ब्ज़ा जमा लिया । कई पुस्तकें इस अवधि में प्रकाशित हुईं और हिन्दी वर्णमाला पर आधारित दीवान के पश्चात तन-मन दोनों ही को कुछ समय के लिए विश्राम मिलना आवश्यक था । लेखन की दबंगई ने ऐसा होने ही नहीं दिया और नई ग़ज़लों की ज़मीनों का एक नया प्रोजेक्ट ऐसा हावी हुआ कि काग़ज़ स्याह होते रहे और क़लम की स्याहियां सूखती रहीं फिर भी, थकान को न आना था, न ही आई ।

लगभग पिछले 15 वर्षो से आँखों ने एक ऐसा रोग पाल रखा है, जिसकी बदौलत आँखों की रोशनी निरन्तर कम होते हुए 6–7 वर्षो से उस मुक़ाम पर आ पहुंची है, जहाँ काग़ज़ पर मोटे स्केच पेन से काफी बड़ा-बड़ा लिखने के बाद, आँखों पर 'मेग्नीफाइंग ग्लास' जैसे शीशे से बहुत नज़दीक देख कर पढ़ लेता हूं। लिखना भी ख़ुद, अब एक सपना है । सामने कौन खड़ा है, यह मुझे पता ही नहीं चलता । अक्सर लोग सामने से सीना तान कर (कतरा कर नहीं) गुज़र जाने का लाभ ले लेते हैं ।

आप सोच रहे होंगे कि जिसे लिखना ही नहीं आता, उसने फिर यह पुस्तकें क्या जादू से प्रकाशित कराईं ? मेरे शायर मित्र सर्वत जमाल ने ऐसी स्थिति में मेरी न सिर्फ़ सहायता की बल्कि अब भी कर रहे है । समय-समय पर वो इन

ग़ज़लों को काग़ज़ पर उतारते रहे, किताब के रूप में संकलित किया, प्रेस तक पाण्डुलिपि पहुंचाई, प्रूफ़रीडिंग की और छपी-छपाई किताबों का बंडल मेरे हवाले किया ।

सर्वत जमाल उम्र में मुझ से छोटे हैं और उम्र का यह फ़र्क़ न दोस्ती में रुकावट बना, न लेखन में । मेरे उस्ताद स्वर्गीय बी.ए. बहादुर 'महशर' बरेलवी साहब अपने अन्तिम 5–6 वर्षों में काफ़ी बीमार रहे और शायरी पर मशवरा देने या तब्सिरा करने की स्थिति में नहीं थे । ऐसी स्थिति में, मैंने स्वयं सर्वत से अपनी ग़ज़लों पर प्रतिक्रिया मांगी तथा मशवरा देने के लिए कहा । पहले तो उन्होंने कुछ आनाकानी की और दोस्ती में दरार पड़ने जैसे ख़तरे की आशंका ज़ाहिर की । मेरे अनुरोध पर उन्होंने मेरी बात मान ली और अब तो कभी किसी शेर के अर्थ या उनके मशवरे को लेकर हमारे बीच एक लम्बी, गर्मागर्म बहस भी हो जाती है । लेकिन इस अदबी बहस का दोस्ती पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता।

यह ग़ज़ल संग्रह तो नहीं, लेकिन इसकी ग़ज़लें सर्वत जमाल की ज़िद का नतीजा हैं । हिन्दी दीवान छप जाने के बाद ज्यों ही मैंने उन से नए ग़ज़ल संग्रह के बार में चर्चा की और कुछ ग़ज़लों के टेप उन्हें सुनाए तो दो ग़ज़लें सुनने के बाद उन्होंने आगे सुनने से इंकार कर दिया । उनका कहना था कि रवायती, पारंपरिक, क्लासिकल ग़ज़लें बहुत हो चुकीं । अब इस संग्रह में वो ग़ज़लें होंगी जिन्हें समसामयिक कहा जाए, जो आम आदमी के सरोकारों से जुड़ी हों । इस शख़्स ने ऐसी हुज्जत की कि मुझे हथियार डालने पड़े ।

ग़ज़ल संग्रह आपके हाथों में है । ग़ज़लों का तेवर या सर्वत जमाल के शब्दों में 'फ़्लेवर' कैसा है, यह तो आप बताएंगे । मुझे आपकी राय का इंतज़ार है । आशा है, मुझे मायूस नहीं करेंगे आप ।

के.के. सिंह मयंक,
'ग़ज़ल'-5@597, विकास खंड,
गोमती नगर, लखनऊ-226001,
मो.-9415418569

आज की ग़ज़ल

श्री के के सिंह 'मयंक' हिन्दी, उर्दू साहित्य जगत का जाना पहचाना नाम है । तकरीबन 25 से अधिक पुस्तकों के प्रणेता मयंक साहब ने हिन्दी, उर्दू काव्य की लगभग समस्त विधाओं में रचना की है । मुख्यतः ग़ज़लकार मयंक साहब की रचनाएँ गीत, मुक्तक, नज़्म, हम्द, मनक़बत, भजन, दोहे इत्यादि विधाओं में प्रस्फुटित होकर साहित्य संसार में समादरित होती रही हैं । उनके संकलनों में हिन्दी, उर्दू वर्णमाला पर आधारित अलग-अलग ग़ज़लों के दो दीवान भी हैं। दीवान लिखना आसान नहीं होता है । उर्दू वर्णमाला पर आधारित दीवान तो मिलते हैं लेकिन हिन्दी वर्णमाला को आधार बनाकर दीवान की रचना करना संभवतः अपनी तरह का पहला प्रयास है ।

दीवान में वर्णमाला के हर एक अक्षर को ग़ज़ल की रदीफ़ का अंतिम अक्षर बनाया जाता है । अगर ग़ज़ल मे रदीफ़ नहीं है तो क़ाफ़िए का अंतिम अक्षर वर्णमाला का अक्षर होगा । इस प्रकार दीवान के लिए 'अ' से लेकर 'ज्ञ' तक प्रत्येक अलग-अलग अक्षर को रदीफ़ का अंतिम अक्षर या रदीफ़ न होने पर क़ाफ़िए का अंतिम अक्षर बनाकर ग़ज़ल कहना होता है जो की बहुत दुष्कर कार्य है । परन्तु मयंक साहब धुन के पक्के हैं अतः उन्होंने यह काम बख़ूबी अंजाम दिया है, इसके लिए उन्हें साहित्य मर्मज्ञों से अत्यधिक सराहना मिली है । मयंक साहब के इस दीवान को ''इण्डिया बुक्स ऑफ़ रिकॉर्ड'' ने हिन्दी वर्णमाला पर आधारित पहला दीवान मानते हुए इसे अपनी किताब मे शामिल किया है ।

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह 'आज की ग़ज़ल' उनके तमाम दूसरे ग़ज़ल संग्रहों से अलग हट कर है । इसमें उन्होंने अपनी शायरी का रंग बदला है और सिर्फ़ आज की बात की है । इसकी तस्दीक़ आपको संग्रह की ग़ज़लों को पढ़कर हो जाएगी।

उनका एक शेर प्रस्तुत है, यक़ीनन आप भी चौंकेंगे और मेरी बात पर मोहर लगाएंगे ।

''बाप है कौन और बेटा कौन,
यंत्र इसका मिलान करता है''

यह शेर सिर्फ़ आज का ही शेर हो सकता है । बीस-पच्चीस साल पहले तो कोई इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि भविष्य में ऐसा भी होगा ।

मयंक साहब को यूँ तो आँखों की बीमारी के कारण देखने में काफ़ी परेशानी होती है लेकिन इसके बावजूद भी उनकी दृष्टि वहाँ-वहाँ पहुंची है जहाँ आम तौर पर सामान्य रचनाकार की दृष्टि नहीं पहुँचती है । वे जदीद या आधुनिक के चक्कर में न पड़कर बिलकुल आज का रंग प्रस्तुत करते हैं । रिवायती शब्दों के साथ-साथ नए आधुनिक शब्द भी साहित्य को देते हैं, जैसे ये शेर देखें-

'अब तो डी जे आ चुके हैं गाँव-गाँव,
ढोल पर गाना बजाना अब कहाँ'

उन्होंने अपनी काव्य कौशल से डी जे शब्द को ग़ज़ल का शब्द बना दिया।

समाज में होने वाली हर तब्दीली पर उनकी बहुत गहरी नज़र है । संग्रह की एक ग़ज़ल जिसकी रदीफ़ 'किराए पर' है, इस संदर्भ में काफी महत्वपूर्ण है । इसी ग़ज़ल का एक शेर बानगी के तौर पर प्रस्तुत है ।

''किसी मुफ़लिस की शादी में कोई अड़चन नहीं है अब
मुहल्ले में मिला करते हैं गहने भी किराए पर''

इसी कड़ी में एक और शेर प्रस्तुत है,

''बड़ाई खुद नहीं करते वो अपनी
बड़े लोगों के चमचे बोलते हैं''

बड़ी से बड़ी बात आसान शब्दों में कहना मयंक साहब की विशेष ख़ूबी

है । ग़ज़ल संग्रह में आज के दौर का हर रंग शामिल है । हिंसा, प्यार, भाईचारा, ममता, दोस्ती, दुश्मनी, वात्सल्य, क्षृंगार, पीड़ा, करुणा लगभग समस्त इंसानी भावों को मयंक साहब ने आज के संदर्भ में आज की शब्दावली में कुशलतापूर्वक व्यक्त किया है । निश्चित रूप से मयंक साहब का यह ग़ज़ल संग्रह आपको रसानुभूति करा पाने में सफल रहेगा, ऐसा मेरा पक्का विश्वास है तथा कहीं न कहीं समाज के कुछ अनजाने पक्षों को भी आपके सामने व्यक्त करेगा ।

अरविंद 'असर'
D-2@15, रेडियो कॉलोनी,
किङ्ग्स्वे कैंप
दिल्ली-110009
मो.-9871329522

शायर और 'आज की ग़ज़ल'

वैसे तो किसी भी साहित्यकार के बारे में लिखा जा सकता है किन्तु जब अपने किसी सगे-संबंधी साहित्यकार के बारे में लिखना हो तो मन बहुत उलझन में पड़ जाता है और उस पर भी अगर अपने पिता के काव्य कौशल के बारे में लिखना हो तो समस्या और भी विकट हो जाती है । कुछ भी लिखना तलवार की धार पर चलने के समान होता है । लिखते समय निरपेक्ष रहना मुश्किल हो जाता है । एक बेटी होने के नाते मैं तो उनकी प्रशंसा ही करूंगी । मैं उनके साहित्यिक क़द को नापने का काम करने की हैसियत तो नहीं रखती । यह काम तो साहित्य के पारखी ही कर सकते हैं लेकिन बचपन से ही उनकी साहित्यिक व्यस्तता, यात्राओं और सम्मानों से उनके क़द का सहज अंदाज़ा हो जाता है। लिखने के प्रति उनका जुनून जो कई वर्ष पहले शुरू हुआ था, आज भी बरक़रार है । आँखों की परेशानी के बावजूद उनका लिखना जारी है । इस क्रम में उनकी कई ग़ज़लें बिखर जाती हैं खो जाती हैं जो जब कभी मिलती हैं, समेट कर रख लेती हूँ । ऐसी बहुत सी ग़ज़लें इस संग्रह में शामिल की गई हैं ।

अत्यधिक साहित्यिक व्यस्तता के बावजूद उन्होंने घर परिवार को हमेशा अपना ध्यान और हम बच्चों को पूरा स्नेह दिया । साहित्य के प्रति उनकी दृढ़ता और लिखने के प्रति उनका जुनून, हमेशा मुझे अपने कार्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी रखने की प्रेरणा देता रहा है और हमेशा रहेगा । मैं आशा करती हूँ कि उनके अन्य संग्रहों कि भांति यह संग्रह भी साहित्य प्रेमियों द्वारा हाथों हाथ लिया जाएगा ।

पूजा सिंह मण्डल
मो.-9432332150

विषय-सूची

1. कब बचपन की हुई विदाई.....17
2. ग़म ज़मीं का, बनके दरिया.....18
3. दिलों में झाँक लेता हूँ.....19
4. इन्सान की क़िस्मत में.....20
5. बंजारों का धरती पर.....21
6. खुशी के साथ हम.....22
7. अपनी चाहत का.....23
8. कहीं ग़म हैं कहीं.....24
9. जो दम हो भंवर के.....25
10. इधर वीरान, उजड़ी.....26
11. पौधों की हक़ीक़त.....27
12. तुम्हारे भक्त दीवाने.....28
13. चलना हम जानते हैं.....29
14. जिसमें एहसासे ग़म.....30
15. भूखा रहता है.....31
16. आदमी हो तो क्यों.....32
17. लम्बे साए का मतलब.....33
18. वफ़ा मत कर वफ़ाओ.....34
19. अब ज़माने को.....35
20. तुम्हारा इस चमन.....36
21. अपनी आँखों में.....37
22. ये मानता हूँ कभी.....38
23. दुश्मनों से जब हमारा.....39
24. तेरे पैरोकार नहीं.....40
25. कोई न ग़ालिब.....41
26. यूँ बुज़ुर्गों का एहतराम.....42
27. मैं रोऊं तो उसका.....43
28. भाई चारा बढ़ा.....44
29. कहीं सूखा कहीं.....45
30. लिखने वाला जब भी.....46
31. कल तलक थे जो.....47
32. जो तिनके आ गए.....48
33. हम निभाते दुश्मनी.....49
34. जैसे दुल्हन घूँघट.....50
35. तेरी ख़्वाहिश दिले.....51
36. दिलों पर जो हुकूमत.....52
37. ज़रा अब मुस्कुराना.....53
38. इस जहाँ में दोस्ती.....54
39. मैं कब कहता हूँ.....55
40. दोस्तों से शिकायत.....56
41. ख़ामोशी पर आमादा.....57
42. ख़त्म अपने आप.....58
43. मवेशियों की तरह.....59
44. संस्कार का रंग.....60
45. इस युग के बिगड़े.....61
46. दिन क्या है.....62
47. आदमीयत का आलम.....63
48. हमको यूँ मत.....64
49. हटाकर फूल सारे.....65
50. दिन उगा तो मयकदे.....66
51. वो तो सांसों में.....67
52. उसे ढूंढ़ा ज़मीं से.....68
53. नए चरागों से दुनिया.....69
54. मुझको जीने का.....70
55. सियासत क्या बताएँ.....71
56. वादे पूरे करके.....72
57. या मुहब्बत की बातें.....73
58. मेरे ज़ख़्मों में गहराई.....74

59. झिझक, शर्मो हया के.....75
60. पेदें में सूराख़ हुआ.....76
61. कोई ताक़तवर.....77
62. सच का उत्तर झूठ.....78
63. शिकवा न शिकायत.....79
64. सुनता हूँ सियासत.....80
65. दोस्त कहते हैं.....81
66. रोज़ जीता रोज़.....82
67. फूटे तेरी ज़बां से.....83
68. अंजाम आप ही हैं.....84
69. मंज़िलें नज़दीक आकर.....85
70. अब के साल बारिश.....86
71. दर्द से, दुख से.....87
72. कोई इंसान इसको.....88
73. अमीरी का लोगों को.....89
74. मैं हूँ सबसे दूर जुदाई.....90
75. पुख़्ता जो निभाने के.....91
76. अब इस दुनिया में.....92
77. छप्परों का क्या करूँ.....93
78. मेरे मुँह पर कालिख.....94
79. अपनी धरा अपना.....95
80. दिल को कितनी ठेस.....96
81. क्या होना आज़ाद.....97
82. संवारिएगा इन्हें तो.....98
83. मन जब जब पर.....99
84. उनका घर आलीशान.....100
85. कब तलक ख़ंजर की.....101
86. खुद को मिट्टी किसान.....102
87. फिर हुआ यूँ कि.....103
88. एक दिन बिटिया.....104
89. क्या तुम्हें इस बात.....105
90. आपने कमाल कर दिया.....106
91. अब तम का अवसान.....107
92. कोशिश कर लो.....108
93. रात आँखों में.....109
94. जब से सूरज मेरे.....110
95. नशा जब टूट जाता.....111
96. कुछ बशर बा कमाल.....112
97. दिये बेख़ौफ़ होकर.....113
98. हर घड़ी करते हैं.....114
99. न कोई फ़न है न.....115
100. सभी ने तो ईश्वर.....116
101. जो बच्चा भोला.....117
102. दहशत, वहशत.....118
103. कुछ नई चीज़.....119
104. जैसे बच्चे खुश हैं.....120
105. रब हमें यूँ आज़मा.....121
106. यह सच है, इसी.....122
107. आँख थी हर शख़्स.....123
108. संत कब कहते हैं.....124
109. जैसे भले इंसां को.....125
110. ज़िन्दगी यूँ गुज़ार.....126
111. मिल गए जब.....127
112. भूख से लड़ने के.....128
113. धुंधले से दिन हैं अब.....129
114. आ गए अपने मुँह.....130
115. ऐसे वैसों के नाम.....131
116. अमावस रात है और.....132
117. जहाँ गुज़रा है.....133
118. ज़रूरतमन्द मालिक.....134
119. नाटक देखे हैं.....135
120. अभी ग़रीबों के.....136
121. मुसीबत का जब.....137
122. फिर ऐसा हुआ.....138

123. अगर फ़ुर्सत मिली.....139
124. केकड़े, कछुए.....140
125. आदमी अब इतना.....141
126. सामना जब वक़्त.....142
127. जानते हो, जब कभी.....143
128. ज्ञान के जब सारे.....144
129. आज के अख़बार में.....145
130. देश को जिसकी.....146
131. अज़्म है तो कहकशां.....147
132. सच तो यह है.....148
133. बादशाहत का ज़माना.....149
134. रोज़ उनके पाँव में.....150
135. यही दुख है सफ़र.....151
136. चमकती उनकी आँखों.....152
137. क्या बेहतर है.....153
138. सब तो होशियार.....154
139. तब ऊंची थी नाक.....155
140. कहाँ जादू-तमाशे.....156
141. मिट गए सब निशान.....157
142. अब खुद में रीढ़ रखने.....158
143. अब धूप निकालने.....159
144. वो चाहते हैं, इशारों.....160
145. माथे पर है चन्दन.....161
146. नाटक दिखलाने.....162
147. क्या कहें, विश्वास.....163
148. गर्मियों के दिन गए.....164
149. खुशनुमा उजालों की.....165
150. इक नई पहचान.....166
151. धर्म की नगरी में.....167
152. बहुत ही बेख़बर.....168
153. तुम शब्दों में आँधी.....169
154. रात ढलती जा रही.....170
155. तेरी दुनिया में.....171
156. इरादा आज़माना.....172
157. सब आलसी हैं.....173
158. इन्सान थे, रिश्ते थे.....174
159. वतन से आपने जिस.....175
160. दुकानें, घर, ज़मीनें.....176
161. तन्हाई में बीते दिन.....177
162. रात गुज़री है तो.....178
163. है कुछ मतलब.....179
164. कैसा दाना.....180
165. होश खोया है.....181
166. चार पैसों की.....182
167. धूप का तल्ख़ तेवर.....183
168. इसी मोड़ पर था.....184
169. मेरे दुश्मन हार.....185
170. जो भी खुदा के बन्दों.....186
171. सबकी संगत से दूर.....187
172. वार तो भरपूर.....188
173. रात कुछ ऐसे बसर.....189
174. अब किसको ईमान.....190
175. जिसको हासिल तेरी.....191
176. बहुत चुप है, बहुत.....192
177. यहाँ तो मुकम्मल.....193
178. वो जब अपनों का.....194
179. पहले तो ख़ूराक.....195
180. उसी की दुश्मनी.....196
181. कोई भी काम.....197
182. खुले आसमानों में.....198
183. देह के व्यापार की.....199
184. यहाँ पत्थर भी.....200
185. बचे हैं तो बचाएगी.....201

¼1½

कब बचपन की हुई विदाई, याद नहीं
कब सपनों ने ली अँगड़ाई, याद नहीं

कब रिश्तों में तल्ख़ी आयी, याद नहीं
कैसा भैया क्या भौजाई, याद नहीं

मैं अपने बीवी बच्चों में खोया था
माँ ने कब आवाज़ लगाई, याद नहीं

कितना बेग़ैरत हूँ, मंज़िल तो पा ली
किसने मुझको राह दिखायी, याद नहीं

घर में अम्न, दिलों में लेकिन था बारूद
किसने फेंकी दियासलाई, याद नहीं

वहशी भीड़ में मेरे अपने शामिल थे
किसने मेरी जान बचाई, याद नहीं

याद रहे डॉलर, यूरो और दीनारें
'मयंक' रूपिया, आना, पाई याद नहीं

¼2½

ग़म ज़मीं का, बनके दरिया अश्रु धारा हो गया
इसलिए शायद समन्दर इतना खारा हो गया

कल भी हम आधीन थे और आज भी आधीन हैं
क्योंकि हर इक हुक्म सरकारी गवारा हो गया

जिस नज़ारे में दिखाई दे गयी तेरी झलक
वो नज़ारा देखने लायक़ नज़ारा हो गया

चूमने दारो रसन मक़्तल पे आशिक़ आ गये
हुस्न वालों का जो इक अदना इशारा हो गया

काश हम भी सीख लेते नाख़ुदाई का हुनर
बेसबब ही दूर कश्ती से किनारा हो गया

मिल्कियत कैसे बदल जाती है हमसे पूछिये
कल तलक जो दिल तुम्हारा था हमारा हो गया

अहले ज़र को ज़र छुपाने की रही चिन्ता 'मयंक'
ख़ुश वही थे जिनका थोड़े में गुज़ारा हो गया

¼3½

दिलों में झाँक लेता हूँ, जो चेहरे देख लेता हूँ
कोई इन्सान कैसा है मैं ऐसे देख लेता हूँ

मुझे परदेस में बच्चों की जब भी याद आती है
खिलौनों की दुकानों पर खिलौने देख लेता हूँ

दुखों की कोई भी शय अब सताती ही नहीं मुझको
ग़मों के दौर में ख़ुशियों के सपने देख लेता हूँ

नज़र आता है मुझको खोखलापन संस्कारों का
अगर बच्चों के हाथों में तमंचे देख लेता हूँ

बसी है फूल से बच्चों की सूरत मेरी आँखों में
ज़मीं पर बैठ कर जन्नत के जलवे देख लेता हूँ

वफ़ा की ज़िन्दगी जब तीरगी में डूब जाती है
हसीनों के नगर में चाँद तारे देख लेता हूँ

'मयंक' आती है मुझको शर्म इस तहज़ीब पर जिस दम
पलटकर जब कभी माज़ी के पन्ने देख लेता हूँ

¼4½

इन्सान की क़िस्मत में रहमत का ख़ज़ीना हो
वो शहरे बनारस हो या शहरे मदीना हो

अल्लाह की रहमत तो हर लम्हा बरसती है
वो माहे मोहर्रम हो या हज का महीना हो

दुनियाये सदाक़त को फिर उसकी ज़रुरत है
सूरत से जो इन्सां हो, सीरत से नगीना हो

फिर सोने की चिड़िया सा बन जाये वतन अपना
जिस्मों पे अगर सबके मेहनत का पसीना हो

दुनियाँ बड़ी ज़ालिम है, इमदाद नहीं करती
बन जाओ रफ़ूगर ख़ुद जब ज़ख़्मों को सीना हो

वो मुल्कपरस्ती को मज़हब में करें शामिल
इज़्ज़त से जिन्हें यारों इस देश में जीना हो

एहसास में श्रद्धा का होना भी ज़रुरी है
जब आपको गंगाजल, ज़मज़म कभी पीना हो

उस जग के खिवैया को इक बार पुकारो तो
जब जब भी 'मयंक' अपना तूफ़ाँ में सफ़ीना हो

¼5½

बंजारों का धरती पर आवास नहीं होता
भूगोल तो होता है, इतिहास नहीं होता

रिश्तों में खटासों का गर वास नहीं होता
तो राम, लखन, सिय को बनवास नहीं होता

कर लेते हो तुम कैसे परिहास ग़रीबों का
हमसे तो ग़रीबों का उपहास नहीं होता

चंदा सा तिरा मुखड़ा बादल सी घनी ज़ुल्फ़ें
तू इतनी हसीं होगी, विश्वास नहीं होता

उस ग़म का बयाँ कैसे लफ़्ज़ों में करूँ जब तू
नज़दीक तो होता है पर पास नहीं होता

शायर वो 'मयंक' अच्छे अशआर न लिख पाता
लिखने का अगर उसको अभ्यास नहीं होता

¼6½

ख़ुशी के साथ हम हरदम रहे हैं
तभी तो दूर हम से ग़म रहे हैं

दिलों पर की सदा हमने हुकूमत
हमेशा साहिबे आलम रहे हैं

जो अपनी बात पर रहते हैं क़ायम
वो शोला तो नहीं, शबनम रहे हैं

मुझे तन्हाई का शिकवा नहीं है
तुम्हारे प्यार के मौसम रहे हैं

वो लहजे काश कोई ढूँढ़ लाए
जो ज़ख़्मों के लिए मरहम रहे हैं

सितम इस वास्ते टूटे थे हम पर
बग़ावत का हमीं परचम रहे हैं

'मयंक' इस बात पर हैरत तुम्हें क्यों
सदा सच्चे जहाँ में कम रहे हैं

¼7½

अपनी चाहत का यक़ीन ऐसे दिलाना होगा
जाने वाले को यहाँ लौट के आना होगा

एक रोटी की तलब हो कि ख़ज़ाने की तलब
तुझको मेहनत के पसीने में नहाना होगा

रब ने सामान रखे ऐश के सब दुनिया में
फिर कहा, ख़ुद को गुनाहों से बचाना होगा

प्यासे मौसम इसे सहरा में बदल डालेंगें
अपनी धरती हमें सर सब्ज़ बनाना होगा

यूँ ही छट पाएगा हर दिल से तअस्सुब का धुआँ
फिर मुहब्बत के चराग़ों को जलाना होगा

लोग दहशत से मरे जाते हैं रोज़ाना 'मयंक'
ऐसी दुनिया में भला किसका ठिकाना होगा

¼8½

कहीं ग़म हैं कहीं थोड़ी ख़ुशी है
इसी का नाम प्यारे ज़िंदगी है

मेरी कमियाँ बताते हैं जो मुझको
उन्हीं से मेरी सच्ची दोस्ती है

है जिसके पास रुतबा, शान, दौलत
उसी के पास इज़्ज़त की कमी है

अगर हम तीरगी दिल की मिटा लें
तो हर सू रोशनी ही रोशनी है

इलाज़े ज़हर वो भी ज़हर देकर
यही तो आज की चारागरी है

सियासत भी दिखाती है तमाशे
कहाँ अब मुल्क में सन्जीदगी है

'मयंक' अफ़सोस में डूबे हैं अपने
तो क्या सच बोलना भी ख़ुदकुशी है

¼9½

जो दम हो भंवर के सहारे चला जा
वगरना किनारे किनारे चला जा

ये तूफ़ाँ है मेहमान बस दो घड़ी का
नदी में सफ़ीने उतारे चला जा

ग़लत मशवरे ग़ैर देते हैं तुझको
तेरी ज़िंदगी है, गुज़ारे चला जा

उधर देख, शायद बदल जाए क़िस्मत
कोई कर रहा है इशारे, चला जा

मुहब्बत की बाज़ी का पहला सबक़ है
अगर जीतना है तो हारे चला जा

जहन्नम अगर तुझको लगती है दुनिया
जहाँ पर हों दिलकश नज़ारे, चला जा

'मयंक' आएगी सामने बढ़ के मंज़िल
फ़क़त अपने रब को पुकारे चला जा

¼10½

इधर वीरान, उजड़ी सी शहादत की निशानी है
उधर टीले पे मजमा है, इबादत की निशानी है

अजब आलम है, उसको याद ही करता नहीं कोई
किताबे ज़िन्दगी जिसकी इनायत की निशानी है

किताबें कौन बांटेगा यहाँ भूखे ग़रीबों को
हुकूमत कह रही है ये बग़ावत की निशानी है

अदावत, ज़ात, भाषा, धर्म, फ़िरक़ों में बँटी दुनिया
इन्हीं का एक हो जाना क़यामत की निशानी है

अदब तहज़ीब से मिलना बुज़ुर्गों से दुआ लेना
पुराने लोग कहते थे, रवायत की निशानी है

कभी तारीफ़ की ख़ातिर किसी के लब नहीं खुलते
अमीरे शहर कहते हैं ये इज़्ज़त की निशानी है

बहुत से मुल्क हैं, पहचान है जिनकी फ़क़त दहशत
'मयंक' इक क़ौमी यकजहती ही भारत की निशानी है

¼11½

पौधों की हक़ीक़त कुछ भी नहीं, बाग़ान की क़ीमत कुछ भी नहीं
बाज़ार में ख़ुशबू बिकती है, गुलदान की क़ीमत कुछ भी नहीं

हर एक बशर में इन्सानी ज़ज़्बात का होना लाज़िम है
इन्सान अगर इन्साँ न रहे इन्सान की क़ीमत कुछ भी नहीं

पूजा में दुआ की ख़ातिर भी तालीम ज़रूरी होती है
जाहिल के लिए तो गीता या क़ुरआन की क़ीमत कुछ भी नहीं

अब शहरे सुख़न में हर शायर अपने ही क़सीदे पढ़ता है
लगता है अदब में ग़ालिब के दीवान की क़ीमत कुछ भी नहीं

मज़हब की 'मयंक' इस दुनिया में हालात हैं बदले-बदले से
सब दैरो-हरम तो महंगें हैं, ईमान की क़ीमत कुछ भी नहीं

¼12½

तुम्हारे भक्त दीवाने रहेंगे
तुम्हीं को देवता माने रहेंगे

ग़रज़ क्या धूप या बारिश से तुमको
मुसाहिब छतरियाँ ताने रहेंगे

परिन्दों की दुआएं पाओगे तब
तुम्हारी छत पे जब दाने रहेंगे

तू अपने हाथ उठा, आशीष दे दे
तेरे पैरों में नज़राने रहेंगे

दिये जलते नहीं और शम्अ गुमसुम
कहाँ अब जा के परवाने रहेंगे

सभी कहते हैं, दुनिया ग़म की नगरी
जो ग़म होगा तो मैख़ाने रहेंगे

'मयंक' इन्सानियत बाक़ी है तुझमें
अभी बोझल तेरे शाने रहेंगे

¼13½

चलन हम जानते हैं, आम क्या है
वफ़ा और इश्क़ का अंजाम क्या है

न बहकाओ, पता है ख़ूब हमको
मुहब्बत के लिए इनआम क्या है

ख़ुदा के नेक बन्दे जानते हैं
ख़ुदा की ज़ात का पैग़ाम क्या है

मशक़्क़त में गुज़र जाएगा जीवन
हमारी सुब्ह क्या है, शाम क्या है

सभी की उँगलियाँ मुझ पर उठी हैं
कोई बतलाए तो इल्ज़ाम क्या है

ज़रुरत है किसे जो आज पूछे
शरीफ़ इन्सान का अब दाम क्या है

मदद करने 'मयंक' आए हैं वो भी
ख़बर जिनको नहीं है काम क्या है

¼14½

जिसमें एहसासे ग़म नहीं होता
वो बशर मोहतरम नहीं होता

कैसी बरसात है कि खेतों का
एक टुकड़ा भी नम नहीं होता

मुझपे इल्ज़ाम है ख़ुदा के सिवा
सर कहीं और ख़म नहीं होता

देर लगती है सच को फलने में
झूठ में कोई दम नहीं होता

थक चुके हैं 'मयंक' वो भी अब
रोज़ मुझ पर सितम नहीं होता

¼15½

भूखा रहता है, जान देता है
फिर भी रोटी किसान देता है

सामने आके वार कर दुश्मन
पीठ पर क्यों निशान देता है

गाँव वाला उधार लाता है बीज
क़र्ज़ लेकर लगान देता है

अच्छी बातें हों या बुरी बातें
ज़हन इन सबको छान देता है

अब वचन की नहीं कोई क़ीमत
कौन किसको ज़बान देता है

रब को जादूगरी से क्या मतलब
पंख हों तब उड़ान देता है

मेरा मालिक 'मयंक' मुझको तो
मुफ़लिसी में भी शान देता है

¼16½

आदमी हो तो क्यों ग़म छुपाते रहो
अश्क पीते रहो, मुस्कुराते रहो

खुदग़रज़ की हवस ख़त्म होगी नहीं
इस पे जितने ख़ज़ाने लुटाते रहो

वो ख़ुदा बख़्श देगा बुलन्दी तुम्हें
उसके आगे सदा सर झुकाते रहो

दुश्मनों से रहो दूर बेशक मगर
अपने यारों को भी आज़माते रहो

पापियों ने कहा, पाप धुल जाएंगे
शर्त है, रोज़ गंगा नहाते रहो

साथियों, उस तरफ़ पेड़ है, छांव है
धूप में क्यों पसीना सुखाते रहो

ख़त्म हो जाएगी आग इक दिन 'मयंक'
वो लगाते रहें, तुम बुझाते रहो

¼17½

लम्बे साए का मतलब है, सूरज ढलने वाला है
शाम ज़रा जल्दी रुख़सत हो, चांद निकलने वाला है

मुल्ला, पंडित मयख़ाने में आते हैं तो आने दो
इक दो जाम से कब इनका ईमान बदलने वाला है

धरती वालो, इस धरती पर चाँद तो है मेरा महबूब
जो है फ़लक पर तारों के संग, वो इस चाँद का हाला है

कैसे आँखें चार करुं मैं, कैसे करुं उनका दीदार
दिल मेरा सीने से बाहर आ के उछलने वाला है

झरने, झील, नदी, सागर सब यह सुनते ही सूख गए
उन आँखों से क़तरा-क़तरा अश्क उबलने वाला है

लब पे तबस्सुम फैल गया है, चेहरे की रंगत बदली
मुझको 'मयंक' ऐसा लगता है संग पिघलने वाला है

¼18½

वफ़ा मत कर वफ़ाओं का यहाँ हासिल नहीं मिलता
मुहब्बत करके देखा है, सुकूने दिल नहीं मिलता

हमारे दोस्त अब दिखलाई भी देते नहीं हमको
तुम्हारी बज़्म में जो भी हुआ दाख़िल, नहीं मिलता

भटकता फ़िर रहा हूँ रात दिन सहरा बयाबाँ में
वो रस्ता जिसपे चलने से मिले मंज़िल, नहीं मिलता

यही दुनिया है, इसमें कितने प्यारे लोग मिलते थे
मगर एक आदमी अब प्यार के क़ाबिल नहीं मिलता

तमाशे खेल जैसा है 'मयंक' आलम अदालत का
कभी शाहिद नहीं मिलते, कभी क़ातिल नहीं मिलता

¼19½

अब ज़माने को संभलना आ गया
वक़्त की रस्सी पे चलना आ गया

गोद माँ की और कन्धे बाप के
याद वो बचपन का पलना आ गया

गर्दिशों ने जब मुझे तालीम दी
ख़ुद-बख़ुद साँचे में ढलना आ गया

सारी कच्ची बस्तियाँ हैरान हैं
आग को चुपचाप जलना आ गया

वो सियासी रहनुमा है आजकल
फूल जिस जिसको मसलना आ गया

डस लिया उसने हमें लेकिन 'मयंक'
नाग का फन तो कुचलना आ गया

¼20½

तुम्हारा इस चमन में आना जाना ठीक समझें क्या
हमेशा पेड़-पौधों को जलाना ठीक समझें क्या

अभी तक लोग गुलदस्ते लिए आते थे मिलने को
उन्हीं हाथों में अब ख़न्जर का आना ठीक समझें क्या

बुराई कीजिए दुश्मन की, उसको गालियाँ दीजे
मगर किरदार पर उँगली उठाना ठीक समझें क्या

मदद की आस लेकर आए हो तो ठीक से बैठो
तुम्हारा इस तरह पलकें बिछाना ठीक समझें क्या

ज़माने का चलन देखो, इबादत भी दिखावा है
दरी, क़ालीन, कुर्सी, शामियाना ठीक समझें क्या

हो जिन पर शक 'मयंक' उनको तो बेशक आज़माओ तुम
भरोसेमन्द को भी आज़माना ठीक समझें क्या

¼21½

अपनी आँखों में तेरा हर अश्क भरना है मुझे
तेरे दुख सुख को भी अब महसूस करना है मुझे

झील सी आँखें तुम्हारी आइने से कम नहीं
अब इन्हीं में देखकर बनना संवरना है मुझे

इश्क़ है गर ग़म का दरिया तो मुझे भी है क़सम
आतिशे उल्फ़त में तपना है, निखरना है मुझे

हर मर्सरत में छुपा रहता है कोई हादसा
अब तबाही से नहीं, ख़ुशियों से डरना है मुझे

वो तो ख़ुद को बे ख़ता कहते रहेंगे, इस लिए
सिर्फ़ अपने आप पर इल्ज़ाम धरना है मुझे

धूप से तपती डगर में तेरे नाज़ुक पाँव हैं
फूल बनकर तेरी राहों में बिखरना है मुझे

अर्श की ऊँचाइयों का ख़्वाब क्यों देखूं 'मयंक'
जब तेरी नज़रे इनायत से उतरना है मुझे

¼22½

ये मानता हूँ कभी हौसला नहीं देते
मगर ये दोस्त मुझे बद्दुआ नहीं देते

तेरा वजूद हमें इसलिए पसन्द आया
पराई आग को हम भी हवा नहीं देते

यक़ीन तो न करेंगे कभी वफ़ाओं पर
हम अपने आपको जब तक मिटा नहीं देते

मरीज़े इश्क़ उसी दर पे है, जहाँ के लोग
दुआ तो करते हैं लेकिन दवा नहीं देते

बस एक बार सही इक झलक ही दिखला दो
तुम्हारे ख़्वाब तो मुझको मज़ा नहीं देते

'मयंक' रखते हैं सबका ख़याल, सबकी ख़बर
मगर किसी को भी अपना पता नहीं देते

¼23½

दुश्मनों से जब हमारा दोस्ताना हो गया
फिर पुराने यारों से मुश्किल निभाना हो गया

हर किसी से दोस्ती मुमकिन नहीं थी बज़्म में
हाँ मगर कुछ से तअल्लुक़ ग़ायबाना हो गया

यह बताएँ आप मेरे शहर में कब आएंगे
आपको देखे हुए मुझको ज़माना हो गया

हर घड़ी बेचैनियां हैं, अश्क हैं और इन्तज़ार
क्या बताएँ कितना मुश्किल दिल लगाना हो गया

अपना कोई एक वादा ही निभा देते हुज़ूर
आपका तो रोज़ इक ताज़ा बहाना हो गया

अब न आने के बहाने कुछ नए भी ढूंढ़िए
आपका हर इक बहाना तो पुराना हो गया

धूम तेरी शायरी की है ज़माने में 'मयंक'
ज़हन तेरा किस तरह से शायराना हो गया

¼24½

तेरे पैरोकार नहीं, मख़दूम नहीं
उन पर क्यों है तेरा करम, मालूम नहीं

मैं परदेस में रोज़ी की ख़ातिर हूँ मगर
देश की मिट्टी की बू से महरुम नहीं

ग़ैर के बच्चे पर भी प्यार तो आता है
ग़ैरत कहती है बस छू ले, चूम नहीं

दुनिया में किसके ऊपर विश्वास करुँ
लोग सियासी ज़हन के हैं, मासूम नहीं

शांत भाव से मिल पाएगी ऊँचाई
आसमान बन, धरती जैसा घूम नहीं

पैसा है, आराम है, सुविधा है लेकिन
अब जीवन में पहले जैसी धूम नहीं

दिल में बसे हैं, हरदम ज़हन में रहते हैं
माता-पिता मेरे 'मयंक' मरहूम नहीं

¼25½

कोई न ग़ालिब, कोई न सौदा, कोई भी मोमिन, मीर नहीं
अज़्म जवां हो तो फिर ग़ज़लें कहना टेढ़ी खीर नहीं

रस्ता है, मन्ज़िल है, सफ़र है, लोग पड़े हैं क्यों चुपचाप
हाथ खुले हैं सबके, किसी के पैरों में ज़ंजीर नहीं

अब अपनी इस धरती पर हम सबको बराबर का हक़ है
अपना हिन्दुस्तान किसी के बाप की अब जागीर नहीं

उनके आते ही यह महफ़िल क़त्लगाह बन जाती है
जबकि ये सच है उनके हाथों में कोई शमशीर नहीं

इश्क़ से नावाक़िफ हैं, सारे पत्थर दिल यह कहते हैं
पार उतर जाए जो दिल के ऐसा कोई तीर नहीं

सुब्ह से लेकर शाम तलक तेरा ही तसव्वुर है लेकिन
दिल का फ्रेम है ख़ाली ख़ाली, क्यों तेरी तस्वीर नहीं

इसका मिटना, गुम हो जाना, नामुमकिन होता है 'मयंक'
प्यार नक़्श होता है दिल पर, काग़ज़ की तहरीर नहीं

¼26½

यूँ बुज़ुर्गों का एहतराम करें
सर झुकाएं, उन्हें सलाम करें

मयकशी मुझको रास आती नहीं
पेश नज़रों के आप जाम करें

ज़िन्दगी जिसने हमको बख़्शी है
याद उस रब को सुब्हो शाम करें

गर ज़माने के साथ चलना है
आदमी तोल कर कलाम करें

दोस्ती ख़त्म हो न जाए कहीं
यूँ ज़बाँ को न बेलगाम करें

चलते रहने से मिलती है मन्ज़िल
क्यों किसी मोड़ पर क़याम करें

ख़ुशियां बाँटें 'मयंक' लोगों में
ज़िन्दगी में नया निज़ाम करें

¼27½

मैं रोऊँ तो उसका चेहरा अश्कों से भर जाता है
यह दिल का दिल से रिश्ता है जो जादू कर जाता है

राम तुम्हारे नाम की महिमा सारी दुनिया देख चुकी
नाम तुम्हारा लिख देने से पत्थर भी तर जाता है

प्यार के ऊबड़ खाबड़ रस्ते, चलना भी आसान नहीं
इस रस्ते पर दीवाना या मस्त क़लन्दर जाता है

उसको क्या बीनाई देगा कोई हकीम या कोई वैद्य
बेशर्मी से जिसकी आँखों का पानी मर जाता है

नदियों से अब पहले जैसा इश्क़ न पहले जैसा प्यार
आज का मजनूं सहरा, जंगल सुनकर ही डर जाता है

रोने चिल्लाने से हासिल कुछ भी नहीं होता है 'मयंक'
सब कहते हैं सब्र करो तो दुख का लश्कर जाता है

¼28½

भाई चारा बढ़ा और शबाब आ गया
मयकदे में अजब इन्क़लाब आ गया

कुछ के हाथों में हैं जाम हीरे जड़े
कोई कूज़े में लेकर शराब आ गया

नफ़रतों से हमें सिर्फ़ कांटे मिले
प्यार माँगा तो ख़त में गुलाब आ गया

जिस तरफ़ देखिए, नूर ही नूर है
आज महफ़िल में वो बेनक़ाब आ गया

आसमाँ पाँव धरती के छूने लगा
ऐसा लगता है फिर इन्तख़ाब आ गया

ग़ैरों अपनों में अब फ़र्क़ कुछ भी नहीं
दौर पहले से बढ़कर ख़राब आ गया

मौत आई 'मयंक' अपना खाता लिए
ज़िन्दगी का मुकम्मल हिसाब आ गया

¼29½

कहीं सूखा कहीं पानी बहुत है
किसानों को परेशानी बहुत है

वही लगने लगी है अजनबी सी
जो सूरत जानी पहचानी बहुत है

तेरी फ़ितरत पे शर्मिन्दा है दुनिया
तुझे क्यों इस पे हैरानी बहुत है

ग़ज़ब के हुकमराँ आए हैं अब के
तबीयत ही में दरबानी बहुत है

इन्हें फ़ौरन फ़रिश्ता मत बनाओ
अभी बच्चों में शैतानी बहुत है

फ़क़त वादे ही करता है सभी से
मगर चर्चा है, वो दानी बहुत है

'मयंक' उड़ने लगे पत्थर, शजर भी
हवा इस बार तूफ़ानी बहुत है

¼30½

लिखने वाला जब भी नई कहानी देता है
किरदारों में अपने राजा रानी देता है

लोग लुटेरे की बाबत भी अकसर कहते हैं
भूखे को भोजन, प्यासे को पानी देता है

घर ही की तालीम से बच्चे होते हैं अच्छे
संस्कार ही बच्चों को शैतानी देता है

उस जाँबाज़ सिपाही की अज़मत को लाख सलाम
जो सरहद पर जीवन की क़ुर्बानी देता है

नया सियासतदान प्यार करता है कुछ ऐसे
ख़ुद को मसनद, जनता को दरबानी देता है

प्यार, मुहब्बत, अम्न, वफ़ा, उल्फ़त, भाईचारा
ऐसा मौसम अब हम को हैरानी देता है

पहले थोड़ी मुश्किल, थोड़ी अड़चन होगी 'मयंक'
बाद में लेकिन सच सबको आसानी देता है

¼31½

कल तलक थे जो क़ैदख़ानों में
उड़ते फिरते हैं आसमानों में

आज तक जिनसे फूल झरते थे
सिर्फ़ काँटे हैं उन ज़बानों में

आ चुका है लगान का मौसम
खलबली मच गई किसानों में

सच के बाज़ार बन्द थे लेकिन
झूठ बिकता रहा दुकानों में

चाँद तारों की बात ख़त्म हुई
इक दिया तक नहीं मकानों में

बँट गई सारे मुल्क की दौलत
देश के चंद ख़ानदानों में

इससे रिश्ता न रखिए आप 'मयंक'
अब सियासत गई सयानों में

¼32½

जो तिनके आ गए दो चार बह के
मेरे अपने, पुराने यार बहके

जो देखी आदमी की ख़ुद परस्ती
दरिन्दे, जानवर ख़ूंख़्वार बहके

हमें तो सिर्फ़ इतना जानना था
जो सच्चे थे, वो कितनी बार बहके

उधर से वापसी मुमकिन नहीं है
चले जाओगे गर उस पार बह के

शरीफ़ों में कोई हलचल नहीं थी
मिला रुतबा तो सब मक्कार बहके

नदी से दूर थी, तब ठीक था सब
सियासत हो गई बीमार बह के

ख़ुशी थी, भाई चारा था, मिलन था
'मयंक' इस बार क्यों त्योहार बहके

¼33½

हम निभाते दुश्मनी अकबर से राणा की तरह
दोस्ती करते मगर कान्हा सुदामा की तरह

नेक बच्चों को बनाना है तो उनको दीजिए
प्यार अम्मी की तरह, फटकार अब्बा की तरह

आइए गोकुल के उस गोपाल को कर लें नमन
नाश कर दे पाप का जो कंस मामा की तरह

जिसके दिल में बस गया भगवान, वो स्थान है
शुद्ध काशी की तरह और पाक काबा की तरह

आदमी के दिल से बेहतर कोई भी पुस्तक नहीं
इसको पढ़कर देखिए क़ुरआन, गीता की तरह

इस जगह से आदमी पाता है शिक्षा, संस्कार
घर भी होता है हमारा पाठशाला की तरह

मज़हबी दंगों से हमको जो बचाता है 'मयंक'
वो ही शंकर सा, नज़र आता है मौला की तरह

¼34½

जैसे दुल्हन घूँघट खोले
लोगों ने ईमान टटोले

सूरज सुब्ह को लेकर आया
उससे पहले पंछी बोले

सच्चाई की राह कठिन थी
पैरों में पड़ गए फफोले

आज सियासत का नारा है
कीचड़ को कीचड़ से धो ले

हमदर्दी और प्यार मिला, बस
हमने सारे मज़हब तोले

जंग छिड़ी है बस्ती-बस्ती
सरहद पर बरसेंगे गोले

अब 'मयंक' हालात हैं बेहतर
कोई नेता ज़हर न घोले

¼35½

तेरी ख़्वाहिश दिले नाकाम क्या है
पता है, इश्क़ का अन्जाम क्या है

हमें मालूम हैं सारे फ़साने
मुहब्बत का यहाँ इनआम क्या है

तुझे तो इल्म है सारे जहाँ का
बता अल्लाह का पैग़ाम क्या है

हर इक बन्दा तमाशाई है तो फिर
यहाँ अब ख़ास क्या है, आम क्या है

मक़ाम इसका भला जानोगे कैसे
किसी मयकश से पूछो जाम क्या है

मशक़्क़त करने वाले जानते हैं
वही बतलाएंगे आराम क्या है

'मयंक' अब सामने आ जाओ खुल कर
बता दो सबको अपना नाम क्या है

¼36½

दिलों पर जो हुकूमत कर रहा है
वही बन्दा मुहब्बत कर रहा है

तेरे ज़िम्मे थे कितने काम और तू
अमानत में ख़यानत कर रहा है

हमारा, आपका है एक ही रब
वही सबकी हिफ़ाज़त कर रहा है

हर उस जाँबाज़ को मेरी सलामी
वतन की जो हिफ़ाज़त कर रहा है

मियाँ चेहरों की बातें भूल जाओ
अब आईना बग़ावत कर रहा है

सुना है आजकल हर सन्त खुलकर
अमीरी की हिमायत कर रहा है

वफ़ादारी 'मयंक' उसकी न देखो
वो चाहत की सियासत कर रहा है

¼37½

ज़रा अब मुस्कुराना चाहता हूँ
मैं तुझको भूल जाना चाहता हूँ

ख़ुशी अब बोझ सी लगने लगी है
तुम्हारा ग़म उठाना चाहता हूँ

मेरी माँ दूध मुझको बख़्श देगी
यक़ीं ख़ुद को दिलाना चाहता हूँ

बहुत परखा है इस दुनिया को अब तो
मैं ख़ुद को आज़माना चाहता हूँ

अंधेरे बढ़ रहे हैं नफ़रतों के
चराग़े दिल जलाना चाहता हूँ

ख़ुशी के फूल खिलते थे जहाँ पर
वही गुलशन पुराना चाहता हूँ

'मयंक' अब मुझको आँखों में बसा लो
मैं इनमें डूब जाना चाहता हूँ

¼38½

इस जहाँ में दोस्ती सस्ती पड़ी
और जग से दुश्मनी महँगी पड़ी

नाख़ुदाई का हुनर काम आ गया
रास्ते में इक नदी गहरी पड़ी

राम थे, अवतार थे भगवान थे
फिर भी उतराई उन्हें देनी पड़ी

हौसला था, सब्र भी था इश्क़ में
दिल पे इक दिन चोट भी खानी पड़ी

कल ग़रीबों के मसीहा रोये, जब
अपनी रोटी बाँटकर खानी पड़ी

मेरी उलझन से परेशाँ हो गए
उनको अपनी ज़ुल्फ़ सुलझानी पड़ी

बस ख़ुदा पर था यक़ीं मुझको 'मयंक'
पाँव पर ख़ुद आ के हैरानी पड़ी

¼39½

मैं कब कहता हूँ, मुल्के ग़ैर को हमराज़ मत करना
तिरंगे की मगर अज़मत, नज़रअन्दाज़ मत करना

कहा अन्जामे उल्फ़त देखकर, टूटे हुए दिल ने
नया आग़ाज़ मत करना, कभी आग़ाज़ मत करना

मुहब्बत, प्यार तुमको इस जहाँ में मिलते रहते हैं
निभाओ सबसे लेकिन ख़ुद के ऊपर नाज़ मत करना

भरो ऊंची उड़ानें, जितनी चाहो आसमानों में
मगर धरती भुला दे, ऐसी तुम परवाज़ मत करना

'मयंक' अल्लाह से यह इल्तिज़ा करता है रोज़ाना
किसी मुफ़सिल की माशूक़ा को तू मुमताज़ मत करना

¼40½

दोस्तों से शिकायत नहीं है
ठीक अपनी ही क़िस्मत नहीं है

नौजवान अब भी हैं इस वतन में
ख़ून में बस हरारत नहीं है

ऐसा लगता है सबको जहाँ में
ज़िन्दा रहने की हसरत नहीं है

तुमको गद्दी मिली और ग़ायब
अब हमारी ज़रूरत नहीं है

दुख सहा, चुप रहा, आदमी में
सच बताने की हिम्मत नहीं है

दौरे हाज़िर में सब कुछ है लेकिन
एक शय, सिर्फ़ ग़ैरत नहीं है

बाअदब हैं 'मयंक' आज सारे
बोलने की इज़ाज़त नहीं है

¼41½

ख़ामोशी पर आमादा इन्सान नहीं होते
हर घर की दीवारों में गर कान नहीं होते

मौत पे यह जीवन कर लेता फ़त्ह अगर हासिल
क़ब्रें ग़ायब होतीं, ये शमशान नहीं होते

हम अपने दिल के अन्दर जो पा लेते उसको
इतने मज़हब और इतने ईमान नहीं होते

आज़ादी नामुमकिन होती, अपने देश में गर
ज़ाँबाज़ों में मिटने के अरमान नहीं होते

ग़ैरों को जो मिलता है उसको तो रब जाने
अपनों पर जो करते हैं, एहसान नहीं होते

नौजवान या बूढ़े तो हुशियार हैं पहले से
बच्चे भी अब ख़तरों से अन्जान नहीं होते

नौसिखियों, नक़ली चेहरों की है, 'मयंक' इज़्ज़त
सिर्फ़ क़लमकारों के ही सम्मान नहीं होते

¼42½

ख़ात्म अपने आप ग़म हो जाएंगे
जब सुपुर्दे ख़ाक हम हो जाएंगे

कौन फिर किसका करेगा एहतराम
सबके सब जब मोहतरम हो जाएंगे

अपनी दुनिया उस घड़ी होगी बहिश्त
जब सितम औरत पे कम हो जाएंगे

पाँच बरसों तक तो कीजे इन्तज़ार
फिर सियासत के करम हो जाएंगे

फ़स्ल बोई है तो चिन्ता मत करो
आँसुओं से खेत नम हो जाएंगे

लोग चुप हैं, इल्म है, बोले अगर
जाने कितने सर क़लम हो जाएंगे

क़ाफ़िलों ने कब ये सोचा था 'मयंक'
दूर मन्ज़िल से क़दम हो जाएंगे

¼43½

मवेशियों की तरह हल किसान खींचता है
उधर ये शोर, हुकूमत का ध्यान खींचता है

सबब यही है जो कुछ लोग उड़ने लगते हैं
ज़मीं को अपनी तरफ़ आसमान खींचता है

मैं झूठ बोलूं तो रुसवाई होती है मेरी
जो सच कहूँ तो ज़माना ज़बान खींचता है

अजीब दौर है, बच्चे बिगड़ रहे हैं मगर
शरारतों पे कहाँ कोई कान खींचता है

ज़मीन्दार अभी तक हैं, जो किसानों की
उधेड़ लेता है चमड़ी, ज़बान खींचता है

वो जिसके सर पे नहीं छत, वही बशर अकसर
तसव्वुरात में अपना मकान खींचता है

'मयंक' अब तो यही इन्तज़ार है मुझको
फ़रिश्ता मौत का कब मेरी जान खींचता है

¼44½

संस्कार का रंग अगर ढल जाता है
घर के दीपक ही से घर जल जाता है

आप शिकारी हैं तो यह भी ध्यान रखें
ख़ुद का तीर कभी ख़ुद पर चल जाता है

ऐसे ही इन्सान ज़ियादा हैं जिनको
सच्चाई का लहजा तक खल जाता है

उनका आना और न आना, कैसा दुख
मंगल और अमंगल भी टल जाता है

उससे दूरी तो है लेकिन उसका ध्यान
चेहरे पर कितनी ख़ुशियाँ मल जाता है

मंडी में सोने की क़द्र नहीं कुछ भी
सोने की क़ीमत पर पीतल जाता है

दुख 'मयंक' चिन्ता से दूर नहीं होते
ज़ंग लगे तो लोहा भी गल जाता है

¼45½

इस युग के बिगड़े हालात
राजनीति की हैं सौग़ात

सूखा कैसा, होती है
आँखों से निस दिन बरसात

शिक्षा और चिकित्सा पर
मारी मँहंगाई ने लात

वो कहते हैं, ख़ाली पेट
सुनते रहिए मन की बात

जीडीपी ने दिखलाई
अपनी क्या है अब औक़ात

प्यार जता कर जुल्म किया
ख़ाक हुए सारे ज़ज़्बात

एक ही सुर में सब हैं 'मयंक'
क्या चैनल क्या अख़बारात

¼46½

दिन क्या है, नहीं देखा और रात नहीं देखी
हम प्यार के राही थे, बरसात नहीं देखी

जब आन पे बन आई, मैदान में उतरे हम
दुश्मन की कभी हमने औक़ात नहीं देखी

इक बार कोई रिश्ता टूटा तो नहीं जोड़ा
तोहफ़े भी नहीं देखे, सौग़ात नहीं देखी

नज़राना दिया हमने दुश्मन को भी फूलों का
फिर जंग नहीं हारे, फिर मात नहीं देखी

गंगा के किनारों पर हिन्दू भी हैं मुस्लिम भी
किसने ये जुगलबन्दी इक साथ नहीं देखी

हर दान दिखावा है इस दौर के दानी का
जो दिल से बँटे ऐसी ख़ैरात नहीं देखी

तहज़ीब ज़रुरी है, सुनते हैं 'मयंक' अकसर
हमने तो करोड़ो में वो बात नहीं देखी

¼47½

आदमीयत का अलमबरदार होना चाहिए
आदमी को आदमी से प्यार होना चाहिए

ज़िन्दगी में सिर्फ़ ख़ुशियों का करें क्यों इन्तज़ार
मुश्किलों से भी हमें दो चार होना चाहिए

साल में त्योहार की मानिन्द ही दो चार बार
अम्न का, तहज़ीब का बाज़ार होना चाहिए

इक तरफ़ अपना तिरंगा, इक तरफ़ है राजनीति
तय करो किस नाम पर जयकार होना चाहिए

लोग कहते हैं कि हाकिम को ख़ुशामद है पसन्द
चापलूसों का तो बेड़ा पार होना चाहिए

कोई पूरब, कोई पच्छिम, कोई उत्तर की तरफ़
क़ाफ़िले का इक अदद सरदार होना चाहिए

ताज की हस्ती नज़र अन्दाज़ जब कर दी 'मयंक'
अब निशाने पर कुतुब मीनार होना चाहिए

¼48½

हमको यूँ मत पहेली में उलझाइए
कोई सीधी डगर हो तो बतलाइए

हर तरफ़ कोठियां, झोंपड़ी और मकाँ
एक भी इनमें घर हो तो बतलाइए

मेरी ख़ुशियों में आप आते हैं प्यार से
एक दिन मेरी मुश्किल भी सुलझाइए

जो कहा कर दिया, आप ही कहते थे
सिर्फ़ वादों से हमको न बहलाइए

नफ़रतों का बहुत बोल बाला हुआ
प्यार के गीत भी झूमकर गाइए

सुनते-सुनते कमी दूर हो जाएगी
आप सच्चाई से ख़ौफ़ मत खाइए

सिर्फ़ ग़ैरों पे होते हैं क्यों मेहरबां
एक दिन मेरे घर भी 'मयंक' आइए

¼49½

हटाकर फूल सारे, ख़ार कर लूँ
बिना सोचे विचारे प्यार कर लूं

मुझे पागल समझ रक्खा है तुमने
बिना कश्ती समन्दर पार कर लूं

कई रिश्ते मुसीबत बन गए हैं
मुसीबत ही को रिश्तेदार कर लूं

अगर यह दोस्ती है, इससे बेहतर
ग़ुलामी आपकी स्वीकार कर लूं

चमक से हो गईं बीमार आंखें
अंधेरे का ज़रा दीदार कर लूं

तुम्हें इन्सान खलते हैं अगर तो
मैं अपना मज़हबी किरदार कर लूं

तुम्हें मुद्दत हुई, देखा नहीं है
'मयंक' आओ तो मैं त्योहार कर लूं

¼50½

दिन उगा तो मयकदे में सिर्फ़ बदहाली मिली
जाम भी टूटे मिले, बोतल मुझे ख़ाली मिली

हर जगह बहरुपिये थे, इस लिए आया इधर
इस अदब के शहर में भी मुझको नक़्क़ाली मिली

जब मैं सच्चाई का दामन थाम कर चलने लगा
तन्ज़ के पत्थर मिले, तारीफ़ में गाली मिली

हर तरफ़ क़ानून की उड़ने लगीं जब धज्जियाँ
फिर हुआ यूँ शहर में चोरों को रखवाली मिली

तंग आकर ज़िन्दगी से मैंने दे दी अपनी जान
मेरे इस करतब पे लोगों से मुझे ताली मिली

रोज़ परखा जा रहा है आदमीयत का लहू
यह बताओ, क्या किसी के ख़ून में लाली मिली

ज़िन्दगी में एक पल ख़ुशियों का आ जाए 'मयंक'
काग़ज़ों पर तो हमेशा हमको ख़ुशहाली मिली

¼51½

वो तो सांसों में भी समाई है
फिर मैं कैसे कहूँ, जुदाई है

इक तरफ़ जाम, इक तरफ़ दो नैन
आज ख़तरे में पारसाई है

लोग नफ़रत से हैं अमीर मगर
मेरी चाहत मेरी कमाई है

प्यार यूँ ही नहीं मिला उसका
मन की माँगी मुराद पाई है

मुझको करना है उनका इस्तक़बाल
रास्ते पर नज़र बिछाई है

ख़्वाब में उनको ठेस लग जाती
एक करवट में शब बिताई है

दूर होगा 'मयंक' अंधियारा
शम्अ उम्मीद की जलाई है

¼52½

उसे ढूँढ़ा ज़मीं से आसमाँ तक
कोई बतलाए अब ढूँढूं कहाँ तक

ये दुनिया जल्द ही सुनसान होगी
बशर के पाँव हैं अब कहकशाँ तक

अंगूठा तो कहानी में कटा था
नए गुरुकुल में कटती है ज़बाँ तक

सवाल उठ्ठेंगे जब किरदार पर तो
कोई जाएगा फिर क्यों आस्ताँ तक

तुम्हारे साथ ही चलता रहूंगा
तुम्हारे पाँव चल पाएं जहाँ तक

नए तारीख़दाँ पैदा हुए हैं
मिटा देंगे शहीदों के निशाँ तक

'मयंक' इक रोज़ शोहरत भी मिलेगी
सुख़न पहुंचे तो असली क़द्रदाँ तक

¼53½

नए चराग़ों से दुनिया को जगमगाना है
हमें तो आख़िरी हद तक दिया जलाना है

हमारा काम, नज़र से नज़र मिलाना है
किसी की आँखों से काजल नहीं चुराना है

ये घर के भेदी, पड़ोसी वतन के दहशतगर्द
कहाँ-कहाँ पे हमें अपना सर खपाना है

मैं खुद में ज़हर भरुं तब लगाऊं इस पर हाथ
मैं जानता हूं, जहाँ नाग है, ख़ज़ाना है

सियासी लोगों की नज़रों में आजकल शायद
किसी परिन्दे का नन्हा सा आशियाना है

हमारे कामों पे उंगली उठाने वाले, सुन
हमारा फ़र्ज़ मुहब्बत के गीत गाना है

ये और बात कि बातें ही तल्ख़ हैं उसकी
मगर 'मयंक' का लहजा तो शायराना है

¼54½

मुझको जीने का क़रीना आ गया
मौत के मुँह पर पसीना आ गया

हो रही हैं रहमतों की बारिशें
क्या चुनावों का महीना आ गया

इस पे मातम कर रहे हैं सब अमीर
मुफ़लिसों को कैसे जीना आ गया

मौत आए या न आए, कैसा ख़ौफ़
आदमी को ज़हर पीना आ गया

ए रफ़ूगर, दूर जाकर बैठ जा
मुझको अपने ज़ख़्म सीना आ गया

मिट गए दुख-दर्द के नामों-निशां
रहमतों का जब ख़ज़ाना आ गया

नाम लेते ही ख़ुदा का ए 'मयंक'
ख़ुद किनारे पर सफ़ीना आ गया

¼55½

सियासत क्या बताएँ हमसे क्या क्या छीन लेती है
ये मुफ़लिस के भी हाथों से निवाला छीन लेती है

इसे ममता नहीं नफ़रत समझना सास की लोगों
बहू की गोद से अकसर जो बच्चा छीन लेती है

कोई रिश्ता पकड़ में आए तो बेटी की शादी हो
ग़रीबों से अमीरी बढ़ के रिश्ता छीन लेती है

जलाना पड़ता है दिन में भी दीपक मुझको झुग्गी में
नई कोठी तो सूरज का उजाला छीन लेती है

दबंगों की शिकायत अब कोई किससे करे जाकर
कभी सरकार ही लोगों का रस्ता छीन लेती है

तुम्हें बेरोज़गारी का नहीं है कुछ भी अन्दाज़ा
यही डायन सभी से काम धन्धा छीन लेती है

'मयंक' औरों को साहिल तक तो पहुंचाती है यह नदिया
मेरी कश्ती से जाने क्यों किनारा छीन लेती है

¼56½

वादे पूरे करके दिखाओ तो जानें
फिर अपनी सूरत दिखलाओ तो जानें

बट्टा खाते बड़े बड़ों के क़र्ज़ किए
रहम किसानों पर भी खाओ तो जानें

अर्थ व्यवस्था जो पटरी से उतरी है
फिर पटरी पर लेकर आओ तो जानें

वर्ण व्यवस्था, छूत-छात के मज़हब की
हर किताब को आग लगाओ तो जानें

कश्मीरी पन्डित भी तो कश्मीरी हैं
घाटी में फिर उन्हें बसाओ तो जानें

गाँधी की हत्या से होगा क्या हासिल
गाँधी के आदर्श मिटाओ तो जानें

गंगा माँ को स्वच्छ बनाने से पहले
मन का मैल 'मयंक' मिटाओ तो जाने

¼57½

या मुहब्बत की बातें करो
या अदावत की बातें करो

जिसको जीने की हो आरज़ू
उससे जन्नत की बातें करो

कुछ करो जिससे आए बहार
क्यों क़यामत की बातें करो

हुकमराँ तैश में आ गए
फिर बग़ावत की बातें करो

सर फिरे आ रहे हैं इधर
अब नसीहत की बातें करो

पिछली वाली गई तो गई
इस हुकूमत की बातें करो

लालची हर कोई है 'मयंक'
सबसे दौलत की बातें करो

¼58½

मेरे ज़ख़्मों में गहराई न होती
अगर तेरी मसीहाई न होती

बराबर हो गए होते जो हम सब
कहीं पर्वत, कहीं खाई न होती

है अपना ज़हन अब तक ठीक वरना
तेरी यादों की पुरवाई न होती

बड़ों को हम अगर सम्मान देते
दुआओं में कमी आई न होती

ख़ुदा की मेहर गर होती न तुझ पर
तेरे आँगन में शहनाई न होती

न पड़ते ख़ून के छींटे ज़मीं पर
जो नफ़रत की घटा छाई न होती

उसे इक़रार करना चाहिए था
'मयंक' अपनी भी रुसवाई न होती

¼59½

झिझक, शर्मो हया के साथ पूरी शादमानी है
तेरी आँखों में गुज़री रात की सारी कहानी है

मैं उठते, बैठते, सोते उसी की यादों में गुम हूँ
वो दिन का चैन है, वो ही मेरी रातों की रानी है

सुनाना चाहता हूँ तुझको अपनी दास्ताने ग़म
ये अफ़साना नहीं है सिर्फ़ मेरी हक़ बयानी है

सितारे तोड़ कर आकाश से लाऊंगा धरती पर
तुम्हारी माँग भरने की मेरी ख़्वाहिश पुरानी है

बताओ सरहदों को तोड़ कर कैसे मिलें दोनों
मैं इक शहरे वफ़ा और तू जफ़ा की राजधानी है

ख़िज़ाँ आई, दरख़्तों पर कोई पत्ता नहीं लेकिन
तुम्हारी याद का मौसम अभी तक ज़ाफ़रानी है

तबस्सुम ही तबस्सुम है 'मयंक' उस शोख़ के लब पर
तेरे पैरों में छाले हैं, तेरी आँखों में पानी है

¼60½

पेंदे में सूराख़ हुआ तो कश्ती में तूफ़ान आया
कुफ़्र हुआ काफ़ूर हमारा खोया हुआ ईमान आया

हिन्दू मुसलमाँ सब रोज़े से, सब उपवास पे बैठे थे
नवरात्रों के पाक दिनों में जब माहे रमज़ान आया

लम्बी उम्र का ख़्वाब संजोए मंज़िल-मंज़िल घूमे हम
रस्ते में शमशान पड़ा था कोई क़ब्रिस्तान आया

दान दक्षिणा के पर्दे में सीता हर ली जाती है
रूप बदलकर साधु का जब भी कोई शैतान आया

अफ़वाहों को सच कहने की होड़ लगी थी बस्ती में
हर इक जाहिल हाथों में लेकर गीता और क़ुरआन आया

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई दंगाई बन बैठे हैं
आज सियासतदानों को भी थोड़ा इत्मीनान आया

जाने किसके भाग्य की रेखा तुम से टकरा जाए 'मयंक'
अतिथि तुम्हारे घर आए तो यूँ समझो भगवान आया

¼61½

कोई ताक़तवर, कोई माज़ूर है
यार क़ुदरत का यही दस्तूर है

किसने चेहरे से हटाया है नक़ाब
इस ज़मीं से आसमाँ तक नूर है

मयकदे में जाऊँ भी तो किस लिए
तेरी आँखों में नशा भरपूर है

देख कर ही तुमको पाता हूँ सुकून
दिल तुम्हारी बेरुख़ी से चूर है

ऐ ख़ुदा, नज़रे इनायत, एक बार
तेरा बन्दा आज तक मजबूर है

हिज्र में एहसास होता है मुझे
आसमाँ धरती से कितना दूर है

तू तो इक मिट्टी का पुतला है 'मयंक'
वो मगर जन्नत की कोई हूर है

¼62½

सच का उत्तर झूठ से देता नहीं
क्योंकि मैं इस दौर का नेता नहीं

आप क्या उम्मीद लेकर आए हैं
आइना रिश्वत कभी लेता नहीं

आदमी भी है उसी मल्लाह सा
नाव टूटी जो कभी खेता नहीं

अब तो शोले आ चुके हैं जिस्म तक
तू अभी तक आग से चेता नहीं

कौन लिक्खेगा हमारी दास्तान
इस जगत में अब महाश्वेता नहीं

जो कहा, करके दिखाएगा ज़रुर
देश प्रेमी कोई अभिनेता नहीं

सत्य की जय किस तरह होगी 'मयंक'
कलयुगी माहौल है, त्रेता नहीं

¼63½

शिकवा न शिकायत, कहीं फ़रियाद नहीं है
क्या कोई ज़बां शहर में आज़ाद नहीं है

दिन रात किसानों ने इन्हें ख़ून से सींचा
ये ख़ून तो फ़स्लों के लिए खाद नहीं है

मैं दूध की नहरों का फ़साना नहीं सुनता
अब इश्क के मैदान में फ़रहाद नहीं है

हलचल है, बहुत भीड़ है नफ़रत की डगर पर
उल्फ़त का नगर आज भी आबाद नहीं है

अब गाँव मुझे गाँव के जैसा नहीं लगता
हल, बैल नदारद हैं, कहीं नाद नहीं है

माशूक की उल्फ़त न मिली है न मिलेगी
दिल आपका गर इश्क़ में बर्बाद नहीं है

तुमने तो 'मयंक' इनको सिखाया है बहुत कुछ
तहजीब का बच्चों को सबक़ याद नहीं है

¼64½

सुनता हूँ सियासत की नज़रों को अखरता है
जो ताज महल अब तक दुनिया में अजूबा है

नफ़रत की हुकूमत ने फ़रमान किया जारी
उलफ़त का पुजारी अब पूजा को तरसता है

तब्दील हुए कैसे क़ानून अदालत में
जिन हाथों में दौलत थी, उन हाथों में सिक्का है

लोगों के दिमाग़ों में वो ज़हर भरा तुमने
इन्सान फ़रिश्ता था, इन्सान दरिन्दा है

तुम अन्न के दाता पर थोड़ा सा तरस खाओ
बदहाल किसानी है, दस रोज़ से फ़ाक़ा है

इक ख़्वाब सी लगती है खेतों की वो हरियाली
अब घास नहीं उगती, बन्जर सा इलाक़ा है

हमने तो 'मयंक' ऐसा सपने में न सोचा था
चौराहे पे मीरा है, चौराहे पे राधा है

¼65½

दोस्त कहते हैं, मेरे प्रतिकूल करते ही नहीं
किस क़दर मासूम हैं वो, भूल करते ही नहीं

अपना विज्ञापन दिखाते हैं ये गुलशन में सदा
अब गुलाबों की सुरक्षा शूल करते ही नहीं

नाविकों को ये पता है डूब जाएंगे मगर
वो नियंत्रण में मगर मस्तूल करते ही नहीं

कर्म का शायद वचन से अब नहीं नाता कोई
लोग अपनी बात के अनुकूल करते ही नहीं

गंध, रंगत, ताज़गी कुछ तो दिखाई दे 'मयंक'
फूल जैसा आचरण अब फूल करते ही नहीं

¼66½

रोज़ जीता रोज़ हारा मत करें
वक़्त को यूँ ही गुज़ारा मत करें

आँख को अच्छा लगे वह देखिये
हर नज़ारे का नज़ारा मत करें

प्यार का नफ़रत से दे डाला जवाब
आप ये हरकत दोबारा मत करें

इक समंदर ही को रोते हैं सभी
अब नदी नालों को खारा मत करें

दर्द, संकट, दुख तो हैं जीवन के अंग
हर घड़ी सोचा विचारा मत करें

दुश्मनों की फ़ौज बढ़ती जाएगी
दोस्तों से यूँ किनारा मत करें

एकता के गीत भी गायें 'मयंक'
आपका, उनका, हमारा मत करें

¼67½

फूटे तेरी ज़बाँ से सवालात फिर वही
आख़िर घुमा फिरा के हुई बात फिर वही

हालांकि शोर था कि तमाशा बदल गया
लेकिन मदारियों के करामात फिर वही

जिनको किया था दूर लहू दे के क़ौम ने
आने लगे हैं मुल्क पे ख़तरात फिर वही

सूखा, अकाल, बाढ़, गरीबी, मुसीबतें
हमको दिखाई देते हैं देहात फिर वही

माता-पिता को आपने ठुकरा दिया अगर
झेलेंगे आप लोग भी सदमात फिर वही

बच्चे 'मयंक' आज भी मासूम से लगे
जज़्बात भी वही, हैं ख़ुराफ़ात भी वही

¼68½

अंजाम आप ही हैं, शुरुआत आप से
जी चाहता है करता रहूँ बात आप से

होठों को सी लिया है, इन आँखों का क्या करूँ
आख़िर छुपाऊँ कैसे मैं जज़्बात आप से

ज़िक्र उसका आप से मेरे अश्कों ने कर दिया
मैं कह नहीं सका था जो कल रात आप से

चुप्पी तो टूटनी है, ये टूटेगी एक दिन
इक दिन करेंगे लोग सवालात आप से

इसका 'मयंक' अब मुझे पूरा यक़ीन है
मुझको मिलेगी प्यार की सौग़ात आप से

¼69½

मंज़िलें नज़दीक आ कर भी न आएं, क्या करें
कश्तियाँ साहिल पे आ कर डूब जाएँ क्या करें

एक बेचैनी थी दिल में, बन चुकी है अब मरज़
काम करती ही नहीं हम पर दवाएँ क्या करें

दोस्तों ने दी दुआएँ, दुश्मनों ने बद्दुआ
इस दुआ पर भी है भारी बद्दुआएँ क्या करें

हौंसला है साथ मेरे, उस तरफ़ हैं आँधियाँ
हम बुझा रहने दें या दीपक जलाएँ क्या करें

आप ही बतलाइए सच की हिफाज़त के लिए
सर कटा दें शान से या सर झुकाएँ क्या करें

एक रस्ता, एक मंज़िल, इक सफ़र का ख़्वाब है
रहनुमा उल्टी दिशा हमको दिखाएँ क्या करें

चल रहे हैं ज़िंदगानी की डगर पर सब 'मयंक'
और क़ातिल चल रहें हैं दाएँ बाएँ क्या करें

¼70½

अब के साल बारिश का इंतज़ार मत करना
बादलों के लश्कर का एतबार मत करना

खुद बहाते रहते हैं, ख़ून आदमी का जो
हम से कहते रहते हैं तुम शिकार मत करना

अक़्लमंद लोगों को टोकने से क्या हासिल
कुछ इशारा मत करना, होशियार मत करना

जानता हूँ नफ़रत में तुम नहाते हो लेकिन
इस नदी में दलदल है, इसको पार मत करना

जब मिलोगे मुझसे तुम, मेरे होंठ चुप होंगे
तुम भी अपनी आँखों को बेक़रार मत करना

प्यार तो इबादत है, प्यार में शहादत है
जान दे सको तो दो, वरना प्यार मत करना

तुम 'मयंक' दुख सह कर कैसे मुस्कुराते हो
यह करिश्मा है, इसको बार बार मत करना

¼71½

दर्द से, दुख से, हम हैं अकड़ कर खड़े
जब से फसलों पे खेतों में ओले पड़े

आप कहते हैं दुश्मन में दम ही नहीं
बोलिए युद्ध में किसके झंडे गड़े

शब्द, अक्षर, कलम, उँगलियाँ और मन
मेरी कविता में किस-किस ने मोती जड़े

कुछ तो कीड़ों-मकोड़ों की मानिंद हैं
चंद इंसान, भगवान से भी बड़े

किस तरह आधुनिक बन सकेगा समाज
सारे प्रस्ताव भेजे गये हैं सड़े

आप इतिहास पढ़िये ये सच्चाई है
लोग रोटी की ख़ातिर महल पर अड़े

दोनों भाषाएँ हैं झूठ और सच 'मयंक'
दोनों संकट में हैं कौन किससे लड़े

¼72½

कोई इंसान इसको बुलाता नहीं
दुख वो मेहमान, आए तो जाता नहीं

तुम अछूतों को बस दूर से देख लो
इनको कोई गले से लगाता नहीं

ईश्वर की नज़र भी गरीबों पे है
वो भी धनवान को आज़माता नहीं

अपने बचने का तुम भी हुनर सीख लो
कोई भी दूसरों को बचाता नहीं

पैदा करता है हीरे चमकते हुए
कोयला ख़ुद कभी जगमगाता नहीं

ऐसा लगता है अब आख़िरी वक़्त है
वरना जलता दिया टिमटिमाता नहीं

अब 'मयंक' आप गंभीर हो जाइए
इन दिनों कोई हँसता-हँसाता नहीं

¼73½

अमीरी का लोगों को अरमान क्यों है
हर इंसान इतना परेशान क्यों है

ख़ुदा यह बता तेरी दुनिया में आख़िर
बशर चार ही दिन का मेहमान क्यों है

सुना है कि अरबों हैं दुनिया में तो फिर
फ़क़त चंद लोगों की पहचान क्यों है

किताबें तो कहती हैं सब हैं बराबर
भिखारी कोई, कोई सुल्तान क्यों है

कठिन है डगर ज़िंदगी की जहाँ में
यहाँ मौत की राह आसान क्यों है

मैं सच्चाई की राह पर चल पड़ा हूँ
यही रास्ता इतना वीरान क्यों है

यहाँ प्यार था और ज़िक्रे बशर था
'मयंक' आज हिंदू-मुसलमान क्यों है

¼74½

मैं हूँ सबसे दूर जुदाई अच्छी लगती है
सच कहता हूँ अब तन्हाई अच्छी लगती है

नेकी करना और उसे फिर दरिया में रखना
हमको फ़िक्रे-हातिमताई अच्छी लगती है

उतनी ही क़ुरआनी आयत लगती है अच्छी
जितनी तुलसी की चौपाई अच्छी लगती है

अम्न-चैन से जीना अच्छा लगता है सबको
कुछ लोगों को हाथापाई अच्छी लगती है

बाढ़-पीड़ितों की आँखों में छाई हैं ख़ुशियाँ
पानी उतरा है तो काई अच्छी लगती है

सब के सब चुप्पी साधे हैं, सब के सब हैं मौन
क्या नेताओं को मँहंगाई अच्छी लगती है

मैंने 'मयंक' अच्छी चीज़ें पूछी थीं लोगों से
क़ैदी बोले, सिर्फ़ रिहाई अच्छी लगती है

¼75½

पुख़्ता जो निभाने के इरादे नहीं होते
मज़बूत कभी लोगों में रिश्ते नहीं होते

ऊँचाई नज़र आती है, साया नहीं होता
ऐसे ही दरख़्तों के फल अच्छे नहीं होते

लोगों को इबादत से ख़ुशी मिलती अगर तो
दुनिया में कहीं खेल-तमाशे नहीं होते

वीरान सा लगता है मुझे शहर का मंज़र
जिस वक़्त मेरी जेब में पैसे नहीं होते

कुछ लोग मशक़्क़त में नहाते हैं लहू से
कुछ लोग पसीने में भी भीगे नहीं होते

इंसान के ऊपर जो मुसीबत नहीं आती
पूजा नहीं होती कहीं सजदे नहीं होते

हीरे तो 'मयंक' अपनी पहुँच से हैं बहुत दूर
अब काँच के टुकड़े भी तो सस्ते नहीं होते

¼76½

अब इस दुनिया में चाहत क्यों नहीं है
किसी दिल में मुहब्बत क्यों नहीं है

किसी की हो न हो लेकिन यहाँ पर
शरीफ़ों की भी इज़्ज़त क्यों नहीं है

तुम्हें मंज़ूर हैं सजदा हमारा
बग़ावत की इजाज़त क्यों नहीं है

उधर चंबल में डाकू कह रहे हैं
हमारी आज दहशत क्यों नहीं है

जो मुर्दा हैं वो मुर्दा ही रहेंगे
मगर ज़िंदों में हरकत क्यों नहीं है

ख़ुदा को इल्म है हम जानते हैं
हमारे घर में बरकत क्यों नहीं है

'मयंक' इतना बताओ इस जहाँ में
तुम्हारे फ़न की शोहरत क्यों नहीं है

¼77½

छप्परों का क्या करूँ, सूखी नदी का क्या करूँ
गाँव के हिस्से में आई मुफ़लिसी का क्या करूँ

ग़ैर की तो छोड़िए अपने पराए हो गए
दुश्मनों में बँट गई इस दोस्ती का क्या करूँ

जेल भिजवाने की धमकी रोज देती है बहू
बेटे की शादी में आई इस ख़ुशी का क्या करूँ

माना पैदावार ने तोड़े पुराने सब रेकॉर्ड
देश में फैली हुई इस भुखमरी का क्या करूँ

ऐसा लगता है की भारत मसख़रों का देश है
मुझको चिंता है कि मैं संजीदगी का क्या करूँ

क्या से क्या मुझको बना डाला 'मयंक' अशआर ने
शायरी तो शायरी है, शायरी का क्या करूँ

¼78½

मेरे मुँह पर कालिख मल कर
लोग निकल जाते हैं छल कर

उनसे जो टकराने आया
जा न सका पैरों पर चल कर

मैं भी उन्हें पहचान न पाया
दुश्मन आए रूप बदल कर

ठोकर तो सबको लगनी है
चलता है अब कौन संभल कर

प्रीत बहुत मँहगी पड़ती है
एक पतंगा बोला जल कर

मैं तेरा भाषण सुन लूँगा
पहले मेरी मुश्किल हल कर

आप 'मयंक' इन्हें पोषण दें
पेड़ बनेंगे पौधे पल कर

¼79½

अपनी धरा अपना अंबर है
अपना घर तो अपना घर है

झाँक रही है जो पश्चिम से
मेरी उस आँधी पे नज़र है

परमेश्वर जब साथ है मेरे
फिर मुझको किस बात का डर है

तुमने ख़ुशी कुछ ऐसी दे दी
आँखें नम हैं, चेहरा तर है

जीवन का मतलब है संकट
कहने को आसान सफ़र है

शम्अ, दिया, क़ंदील हैं गुमसुम
आज हवा का वार किधर है

अब 'मयंक' लगता है जैसे
दुनिया एक अजायब घर है

¼80½

दिल को कितनी ठेस पहुंची ये कभी सोचा नहीं
जाते-जाते आपने मुड़कर मुझे देखा नहीं

अपनी फ़ितरत के लिए माहौल भी तो चाहिए
आँधियों में ढंग से दीपक कोई जलता नहीं

रौज़ ए मुमताज़ की कारीगरी से साफ़ है
आदमी मरते हैं लेकिन फ़न कभी मरता नहीं

रूह बापू की अगर देखे तो बोलेगी यही
इस तरह के हिन्द का तो ख़्वाब तक देखा नहीं

दूसरे होंगे जिन्हें होती है दौलत की हवस
शायरी है शौक़ मेरा, यह मेरा पेशा नहीं

अपने बच्चों के भी मुँह पर डर से रख देते हैं हाथ
लोग कहते हैं कि अब सच बोलना अच्छा नहीं

बाढ़ में डूबे हुए हैं खेत, क़स्बे अब 'मयंक'
और शासन इस पे ख़ुश है गाँव में सूखा नहीं

¼81½

क्या होना आज़ाद व्यर्थ है
इस पर वाद-विवाद व्यर्थ है

कर्महीन हैं सारे चेहरे
ज़िंदा - मुर्दाबाद व्यर्थ है

संसद में, जनता के हित में
कोई भी संवाद व्यर्थ है

जो खेती बंजर हो जाए
उसमें कोई खाद व्यर्थ है

भोगों की संख्या है छप्पन
लेकिन इनमें स्वाद, व्यर्थ है

ख़ुशियों की चिंगारी ढूँढो
मन ही मन अवसाद व्यर्थ है

हो 'मयंक' बस कुल का दीपक
वरना फिर औलाद व्यर्थ है

¼82½

संवारिएगा इन्हें तो संवर भी सकते हैं
नहीं तो प्यार के रिश्ते बिखर भी सकते हैं

इशारा तेरा, करम तेरा और तेरी रहमत
तमाम जुल्म के लश्कर ठहर भी सकते हैं

हमेशा एक सा मौसम कहीं नहीं होता
जो दिल में बैठे हैं दिल से उतर भी सकते हैं

ये जान देने का वादा तो अच्छा लगता है
मगर ये लोग किसी दिन मुकर भी सकते हैं

पहाड़ों, जंगलों, शोलों से और सहरा से
मुहब्बतों के मुसाफ़िर गुज़र भी सकते हैं

मुझे पता है, मेरे दौर में कई बच्चे
बिगड़ गए हैं अगर तो सुधर भी सकते हैं

वतन फ़रोश हों, गद्दार हों यहाँ पे 'मयंक'
वतन के नाम पे इक रोज़ मर भी सकते हैं

¼83½

मन जब जब पर फैलाता है
आकाश भी कम पड़ जाता है

बनता है सिकंदर हर कोई
हर कोई मुँह की खाता है

अब कौन गगन की बात सुने
धरती से अपना नाता है

हम भी गुलाम थे सदियों तक
इतिहास यही बतलाता है

तन छोड़ो, उसका मन देखो
वह गंगा रोज़ नहाता है

मालिक तो बुलाता है उसको
लेकिन बंदा कतराता है

जलता है 'मयंक' जो औरों से
वह चैन से कब जी पाता है

¼84½

उनका घर आलीशान रहने दो
मेरा कच्चा मकान रहने दो

मैं हूँ एक आम आदमी बेबाक
बुज़दिलों को महान रहने दो

आया तहसीलदार तो बोला
यह नशे की दुकान रहने दो

नींद की गोलियां न बाँटो यहाँ
गाँव को सावधान रहने दो

पहले बाढ़ आई और फिर सूखा
इस बरस तो लगान रहने दो

भूखा मरना गवारा है मुझको
तुम मेरा स्वाभिमान रहने दो

मैं 'मयंक' इक अधम, कठोर सही
उनको करुणानिधान रहने दो

¼85½

कब तलक ख़ंजर की और तलवार की बातें करें
भूल कर दहशत परस्ती, प्यार की बातें करें

धर्म की, मज़हब की बातें कर ही लेंगे फिर कभी
आइये इंसान के किरदार की बातें करें

चीन, अमरीका, सुनामी भी ज़रूरी हैं मगर
रोज़ मिलते हैं, कभी परिवार की बातें करें

रिश्तेदारों, दोस्तों का भी कभी हो तज़किरा
क्या ज़रूरी है सदा अख़बार की बातें करें

आप अपनी यात्रा का हाल मत बतलाइए
गाँव से लौटे हैं, पैदावार की बातें करें

हाल अपना सुनने वाला एक भी बंदा नहीं
चाहते हैं सब कि हम सरकार की बातें करें

रुपए की बात अब करता नहीं कोई 'मयंक'
कितने दिन तक पौंड की, दीनार की बातें करें

¼86½

ख़ुद को मिट्टी किसान करता है
काम लेकिन महान करता है

चंदा लेते हैं सब विदेशों से
मुफ्त में कौन दान करता है

काम नेता के पास कुछ भी नहीं
उनके सब काम डॉन करता है

जो भी सच्चा है आज के युग में
बस वही विष का पान करता है

बाप है कौन और बेटा कौन
यंत्र इसका मिलान करता है

शांत रहना, इशारों में कहना
ऐसा बस बेज़बान करता है

शांति देता था धर्म पहले 'मयंक'
आज साँसत में जान करता है

¼87½

फिर हुआ यूँ कि प्यार टूट गया
था, जो नश्शा सवार, टूट गया

धूप निकली तो जोश था सब में
शाम आई, बुख़ार टूट गया

उसने वादा किया था मिलने का
आज फिर एतबार टूट गया

मेरी आँखों से हट गया पर्दा
दोस्ती का ख़ुमार टूट गया

दफ्न थीं दिल में तेरी सब यादें
अब तो वह भी मज़ार टूट गया

दर्द हद से बढ़ा तो फिर मैं भी
हो गया तार तार, टूट गया

एक ही आईना था मेरा 'मयंक'
और वही अब के बार टूट गया

¼88½

एक दिन बिटिया बड़ी हो जाएगी
मेरे घर में चाँदनी हो जाएगी

मुसकुराना हम को जब आ जाएगा
ज़िंदगी तब ज़िंदगी हो जाएगी

सादगी से मत रहो दफ़्तर में तुम
वरना रिश्वत में कमी हो जाएगी

लोग अब रखते नहीं हैं गंगा जल
जैसे घर में गंदगी हो जाएगी

गर यही माहौल क़ायम रह गया
रिश्तेदारी त्रासदी हो जाएगी

यूँ हिक़ारत से शरीफ़ों को न देख
सादगी वरना सती हो जाएगी

अपनी मुश्किल कैसे हल होगी 'मयंक'
कह तो देते हैं सभी, हो जाएगी

¼89½

क्या तुम्हें इस बात का एहसास है
ज़िंदगानी भी तो कारावास है

एक दिन सच्चाई जीतेगी यहाँ
हमको तो इस बात का विश्वास है

धूप, गर्मी, लू का मौसम है मगर
रेडियो बोला, यही मधुमास है

देश में कब आएंगे ख़ुशियों के दिन
हर तरफ़ संत्रास ही संत्रास है

सारे पर्दे खुल चुके हैं झूठ के
चंद लोगों को अभी तक आस है

पेट भरने के लिए जीते नहीं
हमको तो इस भूख का अभ्यास है

कर भला होगा भला इक दिन 'मयंक'
मेरे पुरखों का यही इतिहास है

¼90½

आपने कमाल कर दिया
सबको तंग हाल कर दिया

खुद तो पात पात बस गए
हमको डाल डाल कर दिया

यह हुनर हमें बताइये
किस तरह अकाल कर दिया

तुमने सारे अपने चुन लिए
दान देख भाल कर दिया

मंत्रियों ने भ्रष्ट जन को फिर
देश में बहाल कर दिया

धन्य संस्कार आपके
भीख भी उछाल कर दिया

रहबरों को क्या कहूँ 'मयंक'
जीना भी मुहाल कर दिया

¼91½

अब तम का अवसान चाहिए
हमको भी दिनमान चाहिए

देश भक्ति का आज के युग में
हर दिल में अरमान चाहिए

लाठी, गोली और वर्दियाँ
क्या बस्ती वीरान चाहिए

खुद का दाह कर्म करना है
लोगों को शमशान चाहिए

कन्या भ्रूण कुचल देते हैं
लेकिन कन्यादान चाहिए

जिनके घर दौलत दासी है
उनको भी अनुदान चाहिए

अब 'मयंक' ठेकेदारों को
पूरा हिंदुस्तान चाहिए

¼92½

कोशिश कर लो, एक ठिकाना मुश्किल है
आज के युग में घर बनवाना मुश्किल है

अँधियारा दो पल में मिट जाए लेकिन
तेज हवा में दीप जलाना मुश्किल है

मैं सच्चाई के रस्ते पर निकला हूँ
मेरा ज़िंदा वापस आना मुश्किल है

इनकी लज़्ज़त और ज़ायक़ा क्या कहना
ज़िल्लत के पकवान पचाना मुश्किल है

फूल तोड़ना और मसलना है आसान
गुलदस्ते में फूल सजाना मुश्किल है

सबको ख़ुश रख पाना होता है मुश्किल
दुनिया में संबंध निभाना मुश्किल है

यह भड़की तो भस्म करेगी सबको 'मयंक'
नफ़रत वाली आग बुझाना मुश्किल है

¼93½

रात आँखों में कट जाती है
मेरी नींद उचट जाती है

जब मैं आता हूँ बिस्तर पर
तेरी याद लिपट जाती है

कैसे इस में जोश भरूँ मैं
बुज़दिल क़ौम सिमट जाती है

धन बढ़ जाता है रिश्वत से
लेकिन इज़्ज़त घट जाती है

नफ़रत मिट जाती है इक दिन
जैसे खाई पट जाती है

लहरें कितनी कोशिश कर लें
नाव नदी के तट जाती है

जब 'मयंक' रहमत हो उसकी
सारी बाधा हट जाती है

¼94½

जब से सूरज मेरे सर पर आया है
मेरे क़द से छोटा मेरा साया है

कैसी दुनिया दे दी हम इन्सानों को
कोई ख़ुश है और कोई उकताया है

देश की ख़ातिर दो पल की कुर्बानी दो
वीरों ने तो अपना ख़ून बहाया है

तुम ने जाने किस किस के मुँह बंद किए
हमने तो सच्चाई को झुठलाया है

तापमान धरती का बेहद गर्म हुआ
आसमान पर कैसा बादल छाया है

कोई माफ़िया गुज़रेगा चौराहे से
वर्दी वाला घबराया घबराया है

ऐसे वैसे भी 'मयंक' अब दुश्मन हैं
हमने ये इनआम अम्न का पाया है

¼95½

नशा जब टूट जाता है, बड़ी तकलीफ़ होती है
वही दुख लौट आता है, बड़ी तकलीफ़ होती है

जिसे पाला, जिसे पोसा, जिसे चलना सिखाया था
वो जब आँखें दिखाता है, बड़ी तकलीफ़ होती है

मेरे आँगन में दीवारें उठीं तो मुत्मइन था मैं
पड़ोसी मुस्कुराता है, बड़ी तकलीफ़ होती है

कटे हैं पंख, पिंजरे में पड़ा रहता है पंछी चुप
मगर जब फड़फड़ाता है, बड़ी तकलीफ़ होती है

वफ़ादारी से जिस इंसान को मतलब नहीं कोई
हमें वो आज़माता है, बड़ी तकलीफ़ होती है

सड़क पर दो रुपए के वास्ते मासूम सा बच्चा
जब अपना सर झुकाता है, बड़ी तकलीफ़ होती है

'मयंक' इस शहर में कैसी उजालों ने चमक छोड़ी
अंधेरा जगमगाता है, बड़ी तकलीफ़ होती है

¼96½

कुछ बशर बा कमाल होते हैं
सब कहाँ बेमिसाल होते हैं

हमने देखा है, इल्म वालों में
रोटियों के सवाल होते हैं

कितना छोटा सा ज़हन है अपना
कैसे कैसे ख़याल होते हैं

घर, सड़क, रेल, बस हो या दफ़्तर
हर जगह अब दलाल होते हैं

ख़ुद ब ख़ुद आ के फँसते हैं पंछी
इतने रंगीन जाल होते हैं

आप पहचान ही न पाएंगे
आज भी द्वारपाल होते हैं

तुम ने फ़सलों की बात की है 'मयंक'
सोच पर भी अकाल होते हैं

¼97½

दिये बेख़ौफ़ हो कर जल रहे हैं
हवाओं के बुरे दिन चल रहे हैं

चमकने को कहूँ अच्छा मैं कैसे
यहाँ हर दिन सितारे ढल रहे हैं

वो जिन की हो रही है रोज़ पूजा
वही बरसों यहाँ पागल रहे हैं

भिखारी, संत, नेता और फ़नकार
बताओ किसको पैसे खल रहे हैं

कभी आ जाएँ अच्छे दिन भी शायद
सुना तो है बुरे दिन टल रहे हैं

किसानों की तो आँखें नम हैं अब तक
फ़लक पर देर तक बादल रहे हैं

'मयंक' इस देश में हैं देश-द्रोही
मगर दामाद जैसे पल रहे हैं

¼98½

हर घड़ी करते हैं ग़द्दारों की बात
मैं नहीं सुनता हूँ मक्कारों की बात

इस विषय पर किस तरह चर्चा करें
कर रहे हैं लोग अंगारों की बात

कौन अब सरदार है, बतलाइए
हर तरफ तो है असरदारों की बात

कर रहे हैं आत्महत्या फिर किसान
गाँव तक पहुंची ज़मींदारों की बात

आए हो बस्ती में इतनी शान से
क्या सुनोगे दर्द के मारों की बात

आज संसद भी खचाखच है भरी
हो रही है ख़ास परिवारों की बात

अब के युग में कर रहे हो तुम 'मयंक'
तीर की, ख़ंजर की, तलवारों की बात

¼99½

न कोई फ़न है न काग़ज़ न रोशनाई है
अदब के नाम पे हाथों की अब सफ़ाई है

हमारे दौर में तुम संस्कार मत ढूंढो
तमीज़ कौन कहे सिर्फ़ बेहयाई है

उगा जो चाँद मेरे घर में चाँदनी उतरी
उधार की ही सही, रोशनी तो आई है

किसी के पाँव छुओ और तलुवे भी चाटो
तुम्हें ये बात बुज़ुर्गों ने कब सिखायी है

किया है प्यार तो उससे कहो क़ुबूल करे
अगर क़ुबूल न हो फिर तो जग हँसाई है

बदल रहा है ज़माना, बदल गईं चीज़ें
गुनाह था जो कभी, आज पारसाई है

ये और बात कि दौलत न हाथ आई मगर
'मयंक' आपने इज़्ज़त बहुत कमाई है

¼100½

सभी ने तो ईश्वर से वरदान माँगा
मगर चंद लोगों ने बस ज्ञान माँगा

अमीरी, ग़रीबी न हिन्दू न मुस्लिम
ख़ुदा ने ज़माने से इंसान माँगा

मुहब्बत ही माँगी है हमने हमेशा
बताओ कभी हमने सम्मान माँगा

मेरे ईश्वर ने मुझे ज़िंदगी दी
बदन उसने माँगा तो बेजान माँगा

बहुत प्यार था मुझको अपने वतन से
न ईरान माँगा, न जापान माँगा

मचलती हुई लहर माँगी थी हमने
समंदर से कब हमने तूफ़ान माँगा

'मयंक' आज शायर करोड़ों हैं लेकिन
किसी ने कभी तुझ से दीवान माँगा

¼101½

जो बच्चा भोला भाला बोलता है
मेरे घर में उजाला बोलता है

ज़बाँ कहती नहीं कुछ भी सफ़र में
मगर पैरों का छाला बोलता है

हवेली हो गई वीरान जब से
वहाँ मकड़ी का जाला बोलता है

ज़रा लहजा बदल, तेवर कड़े कर
तू कितना ढीला ढाला बोलता है

हमें अफ़सोस है, तेरी ज़बाँ से
अमीरों का निवाला बोलता है

यहाँ जाहिल ही चिल्लाते हैं अक्सर
कहाँ तहज़ीब वाला बोलता है

'मयंक' इस बार हिन्दी में छपे तुम
ये उर्दू का रिसाला बोलता है

¼102½

दहशत, वहशत और हैरानी
सूख गया आँखों का पानी

नफ़रत ने यह हाल किया है
भूल गए हम प्रेम कहानी

ज़िंदा रहना मुश्किल होगा
मरने में तो है आसानी

वक़्त ने क़िस्से छीन लिए हैं
कैसा राजा, कैसी रानी

हाथ बढ़ा कर छूना था बस
मैंने मन की बात न मानी

बस्ती में सम्मेलन होगा
ज्ञान बघारेंगे अज्ञानी

साफ़-साफ़ कहिए 'मयंक' जी
क्या अब फ़न है बेईमानी

¼103½

कुछ नई चीज़ आज बेचोगे
शर्तिया लोक लाज बेचोगे

लोग बोली लगाएंगे इसकी
गूंगा बहरा समाज बेचोगे

लोग सस्ता सा रोग लाये हैं
तुम तो मँहंगा इलाज बेचोगे

कुछ विदेशी महल में हैं मेहमान
क्या इन्हें तख़्तो-ताज बेचोगे

आ रहें हैं चुनाव वाले दिन
कितना सस्ता अनाज बेचोगे

यह सभी राष्ट्र की धरोहर हैं
टाटा, बिरला, बजाज बेचोगे

अब नई रस्में आ गई हैं 'मयंक'
क्या पुराने रिवाज बेचोगे

¼104½

जैसे बच्चे ख़ुश हैं पत्थर बाँट कर
आप भी ख़ुश हैं समंदर बाँट कर

कोई पैसे बाँट कर ख़ुश हो गया
कोई कुछ लोगों में अक्षर बाँट कर

बाप को दालान का कोना मिला
अपनी ही औलाद को घर बाँट कर

आत्मा ईमान वाली है मेरी
दिल मगर कहता है बंदर बाँट कर

अब किसानों को नहीं खेती का मोह
क्या करेंगे खेत बंजर बाँट कर

ऊँचा-नीचा, हिन्दू-मुस्लिम कर दिया
तुमने इन्सानों को अंतर बाँट कर

जो मिला, करते हैं क़द्र उसकी 'मयंक'
हम नहीं रहते हैं अवसर बाँट कर

¼105½

रब हमें यूँ आज़मा सकता है क्या
दूसरी दुनिया बना सकता है क्या

पूछ लो हारे हुए सुल्तान से
अब वो अपना सर झुका सकता है क्या

कोई जादूगर हो, कोई पीर संत
आसमाँ से चाँद ला सकता है क्या

हर तरफ पहरे लगे हैं शहर में
अब भी दुश्मन घर में आ सकता है क्या

जिसके लहजे में शराफ़त ही नहीं
वह कभी इज़्ज़त कमा सकता है क्या

मुझको जाना है मुहब्बत के नगर
रास्ता कोई बता सकता है क्या

ऐसी ग़ज़लें मत सुनाओ तुम 'मयंक'
सुनके कोई मुस्कुरा सकता है क्या

¼106½

यह सच है, इसी शहर की बेजान हवा में
पत्तों की तरह उड़ गए इंसान हवा में

पानी से उठा जब तो उड़े होश सभी के
कमज़ोर नज़र आता था तूफ़ान हवा में

तक़दीर नहीं, वक़्त की आँधी ने उड़ाए
दरबार हवा में, कभी सुल्तान हवा में

हम लोग तो ज़िंदा हैं हवाओं के भरोसे
तुमको तो नज़र आते हैं शैतान हवा में

साहित्य जगत पर भी सियासत का शिकंजा
तुलसी कभी मीरा कभी रसखान हवा में

हर शख़्स ये कहता है घुटन चीज़ बुरी है
कुछ लोग बताते हैं कि नुक़सान हवा में

मुझको तो 'मयंक' आज हवाओं ने बचाया
हालांकि मेरी खो गई पहचान हवा में

¼107½

आँख थी हर शख़्स की हालात पर
कुछ की शह पर थी तो कुछ की मात पर

सब को इज़्ज़त रास आती है कहाँ
आप भी आ ही गए औक़ात पर

बिक तो जाता है यहाँ पर आदमी
कोई रिश्वत पर कोई सौग़ात पर

झूठ पर ख़तरा नहीं कोई यहाँ
सर कटा करते हैं सच्ची बात पर

आदमी पर भारी पड़ते हैं सदा
कौन हावी हो सका जज़्बात पर

एक जुगनू की चमक मत पूछिये
इक तमांचा सा पड़ा था रात पर

बादलों की बेवफ़ाई से 'मयंक'
अब कोई लिखता नहीं बरसात पर

¼108½

संत कब कहते हैं, तू सौग़ात ला
हाँ अगर तेरी है कुछ औक़ात, ला

तू अगर बादल है, अपना मान रख
प्यासी धरती के लिए बरसात ला

देने वाले ने कहा ख़ैरात ले
और भिखारी ने कहा, ख़ैरात ला

मेरे हाथों में भी इक तलवार दे
देखनी हो गर मेरी औक़ात, ला

ऐ ख़ुदा कब तक उजालों को सहूँ
मेरी ख़ातिर सुब्ह सी मत रात ला

चाहती है सारी दुनिया अब सुकून
किसने तुझसे कह दिया ख़तरात ला

लोग उकताए हैं नफ़रत से 'मयंक'
अपने दिल में प्यार के जज़्बात ला

¼109½

जैसे भले इंसाँ को सहारा नहीं मिलता
तूफ़ान में किश्ती को किनारा नहीं मिलता

ख़ुशियों से भरा हो कि उदासी से भरा हो
जो लम्हा गुज़र जाये दुबारा नहीं मिलता

मुजरिम को भी फाँसी नहीं दी जाएगी, जब तक
जल्लाद को हाकिम का इशारा नहीं मिलता

कोई भी सगुन मेरे मुक़द्दर में नहीं है
पंडित ने बहुत सोचा-विचारा, नहीं मिलता

बरसात की रातों में उमड़ उठते हैं बादल
फिर चाँद कहाँ, कोई सितारा नहीं मिलता

हैरत है कि सरकार ने एलान किया है
अब कोई यहाँ भूख का मारा नहीं मिलता

मिलते हैं 'मयंक' आज भी बचपन के वो साथी
बस दिल में वो जज़्बात का धारा नहीं मिलता

¼110½

ज़िंदगी यूँ गुज़ार ली हम ने
जीत के बदले हार ली हम ने

बंद मुट्ठी में लाखों सपने थे
कल हथेली निहार ली हम ने

भीड़ में रह के इतनी तन्हाई
ख़ुदख़ुशी तक विचार ली हम ने

हम बहुत सीधे सादे बंदे थे
सोचिए, क्यों कटार ली हम ने

अब कहाँ गुफ़्तगू में अपनापन
सच की गर्दन उतार ली हम ने

एक दुनिया, अनेक भाषाएँ
दुख है, भाषा उधार ली हम ने

हाथ हमको मिला तुम्हारा 'मयंक'
अपनी क़िस्मत संवार ली हम ने

¼111½

मिल गए जब हराम के पैसे
भाड़ में जाएँ काम के पैसे

क्या तमाशा है आज कल कुछ लोग
माँगते हैं सलाम के पैसे

रास्ते से अलग निकाली राह
मैं बचा लाया शाम के पैसे

देखो आपस में मिल के बाँट लिए
हाकिमों ने गुलाम के पैसे

मैंने वर्दी का रोब दिखलाया
मिल गए रोक थाम के पैसे

देश कंगाल हो गया अपना
क्या हुए सब अवाम के पैसे

मोल कैसा 'मयंक' पैसों का
अब तो पैसे हैं नाम के पैसे

¼112½

भूख से लड़ने के अवसर आ गए
कुछ निहत्थे जान ले कर आ गए

एक अलौकिक ज्ञान मेरे पास है
मेरे मन में ढाई आखर आ गए

छोड़ कर दुनिया गए जब नर्क में
यूँ लगा जन्नत के अंदर आ गए

ये हवा मद्धम हुई और थम गई
फिर फ़लक वाले ज़मीं पर आ गए

शाम को सूरज के ढल जाने के बाद
सुब्ह के भूले हुए घर आ गए

आदमी थे जुल्म सहते कब तलक
एक दिन हाथों में ख़ंजर आ गए

सारे बौने सीढ़ियाँ ला कर 'मयंक'
अब मेरे क़द के बराबर आ गए

¼113½

धुंधले से दिन हैं अब भी अंधेरी सी रात है
बतलाओ क्या हमारी यही कायनात है

मरने के बाद जन्म-पुनर्जन्म की कथा
इस ज़िंदगी की क़ैद से किसको निजात है

घुट-घुट के मरने को मैं कहूँ ज़ीस्त किस तरह
मुझको यक़ीन कोई दिलाए, हयात है

सूरज, सितारे, चाँद चलें किसके हुक्म से
अल्लाह के अलावा यहाँ किसकी ज़ात है

रोटी चुराते पकड़े गए आज कुछ ग़रीब
वर्दी ने यह बताया, बड़ी वारदात है

इंसान बच बचा के छुपा डाल डाल में
संकट तो अक़्लमन्द है, वो पात पात है

महफ़िल में भीड़ तो है मगर सब ख़मोश हैं
शायद 'मयंक' आप की ग़ज़लों की बात है

¼114½

आ गए अपने मुँह बखान के दिन
राजभाषा के, राष्ट्र-गान के दिन

फ़स्ल होती तो होती रखवाली
जाने कब के गए मचान के दिन

सावधानी बहुत ज़रूरी है
हम भी रखते हैं छान छान के दिन

कोई देता है द्वार पर दस्तक
रात में कौन आया, जान के दिन

गर्म मौसम गुलेल के जैसा
और सूरज ने मारे तान के दिन

श्राद्ध पखवारा, जेब पर भारी
ब्राह्मण ख़ुश हैं, आए दान के दिन

हैं 'मयंक' अपने देश की शोभा
संध्या, आरती, अज़ान के दिन

¼115½

ऐसे वैसों के नाम क्या लिखना
हर किसी को सलाम क्या लिखना

काम चोरों ने शर्त रख दी है
मेरे हिस्से में काम क्या लिखना

देखिये और सिर्फ़ चुप रहिए
आजकल का निज़ाम क्या लिखना

सिर्फ़ आज़ादियाँ लिखें सारी
शहर में रोक-थाम, क्या लिखना

इनको शिक्षित नहीं खरीदेंगे
मँहंगी चीज़ो पे दाम क्या लिखना

राम तो भा गए सियासत को
पत्र में राम-राम क्या लिखना

राजशाही अभी तलक है 'मयंक'
जी रहे हैं अवाम, क्या लिखना

¼116½

अमावस रात है और चाँदनी की बात करते हैं
अजब इंसान हैं दुख में ख़ुशी की बात करते हैं

वो दौलतमंद, जिनका ओढ़ना-सोना ही दौलत है
वही मंचों पे आ कर मुफ़लिसी की बात करते हैं

हमेशा, हर घड़ी हमको समझते हैं ये जब दुश्मन
पड़ोसी हुक्मराँ क्यों दोस्ती की बात करते हैं

इधर सरकार का दावा है सौ प्रतिशत सिंचाई का
ये देहाती मगर सूखी नदी की बात करते हैं

किसी अबला की मर्यादा बचाने कौन आता है
यहाँ सब लोग लेकिन द्रौपदी की बात करते हैं

बयानों पर कभी अपनी नज़र दौड़ाइए साहब
हमेशा आप ही संजीदगी की बात करते हैं

इधर नफ़रत, उधर नफ़रत, अजब माहौल है जग का
'मयंक' इस दौर में हम शायरी की बात करते हैं

¼117½

जहाँ गुज़रा है बचपन, काट देंगे
हमारे भाई आँगन काट देंगे

वो जिन लोगों को रास आई गुलामी
यूँ ही घुट घुट के जीवन काट देंगे

ख़ुशामद क्यों करूँ मैं अफ़सरों की
बहुत होगा तो वेतन काट देंगे

अगर शासन के ख़र्चे बढ़ रहें हैं
तो वृद्धावस्था पेंशन काट देंगे

ये बादल आयें, जाएँ और न बरसें
किसान ऐसे ही सावन काट देंगे

हमें सच बोलना मँहगा पड़ेगा
हमारी आप गर्दन काट देंगे

'मयंक' आज़ाद होना है ज़रूरी
चलो हम सारे बंधन काट देंगे

¼118½

ज़रूरतमन्द मालिक जब बुलाये, दास आता है
समंदर भी कहाँ चल कर नदी के पास आता है

अदालत के बड़े हाकिम को धमकी दी है गुंडों ने
सुना हैं उनके बंगले पर ही अब इजलास आता है

इधर हिन्दू-मुसलमानों में कत्ले आम है लेकिन
यहीं रामू के घर अक्सर अली अब्बास आता है

किसी को इल्म हो तो हमको इसकी जानकारी दे
हमारे शहर में कब, किस जगह मधुमास आता है

गुलामी जिनको पैरों पर खड़ा होने नहीं देती
उन्हें घुटनों के बल चलना ही शायद रास आता है

कई वादे, कई दावे, कभी खुशियाँ, कभी सपने
तुम्हारी लनतरानी पर किसे विश्वास आता है

'मयंक' अब कौन सच्चाई के रस्ते पर क़दम रक्खे
पता है सच के ही रस्ते में कारावास आता है

¼119½

नाटक देखे हैं, मक्कारी देखी है
हमने भी तो दुनियादारी देखी है

सवा अरब की आबादी है भारत में
अस्सी प्रतिशत ने दुश्वारी देखी है

देश भक्त के देश में दर्शन दुर्लभ हैं
अब तक तो केवल ग़द्दारी देखी है

भ्रष्ट तंत्र पर नाच रही है मँहगाई
सबने नागिन इच्छाधारी देखी है

सारा सिस्टम फूँक ताप दे जो पल में
किसने ख़ुद में वो चिंगारी देखी है

सूखा, बाढ़, आपदा, संकट में सुविधा
राहत हमने भी सरकारी देखी है

ममता, प्यार 'मयंक' नहीं दिखते हमको
बूढ़ी आँखों में लाचारी देखी है

¼120½

अभी ग़रीबों के कुछ खानदान तो होंगे
तुम्हारे शहर में कच्चे मकान तो होंगे

हवा के रुख़ पे नहीं ख़ुद बताएगी रस्ता
पुरानी नाव सही, बादबान तो होंगे

नगर से गाँव तलक सिर्फ़ पानी पानी है
हवाई सर्वे करो वायुयान तो होंगे

ज़मीन छोड़ो, चलो आसमाँ की सैर करें
इस आसमान पे कुछ आसमान तो होंगे

कचहरी पहुँचा है बस्ती का एक एक इंसान
जमींदार के हक़ में बयान तो होंगे

ये लेन देन का मतलब विवाह होता है
दहेज मिल गया, सिंदूर दान तो होंगे

'मयंक' देखिये लगता है कोई गाँव इधर
अगर हैं खेत, यहाँ पर किसान तो होंगे

¼121½

मुसीबत का जब सामना हो गया
इरादा पिघल कर हवा हो गया

भँवर में फँसा तो पुकारा उसे
ख़ुदा ख़ुद मेरा नाख़ुदा हो गया

जमींदार जी आप मालिक मेरे
मेरा खेत अब आपका हो गया

उधर देखिये, दूर, चौड़ी सड़क
वो खलिहान था, रास्ता हो गया

कोई दूसरी शक्ल दिखती नहीं
तुम्हें याद रखना सज़ा हो गया

गुलामों की चमड़ी उधेड़ी गई
नमक आज सारा अदा हो गया

मठों की भी महिमा अजब हैं 'मयंक'
कोई भक्त से देवता हो गया

¼122½

फिर ऐसा हुआ जाल डाले गए
समन्दर से मोती निकाले गए

हुजूम आया था मेरे दीदार को
सभी मिल के मय्यत उठा ले गए

मुझे इल्म इसका नहीं हो सका
मेरी आँखों से कब सब उजाले गए

मुसलसल सफ़र और मंज़िल की धुन
मेरे संग पैरों के छाले गए

जब इंसान आ कर कोई बस गया
हवेली से मकड़ी के जाले गए

हम इंसान क्या इसका शिकवा करें
फ़लक पर भी पत्थर उछाले गए

'मयंक' अब मैं देहात को क्या कहूं
न जाने कहाँ गाँव वाले गए

¼123½

अगर फ़ुर्सत मिली, इतिहास को भी देखा जाएगा
दरिंदो की, लहू की प्यास को भी देखा जाएगा

बदन इंसान का सबकी निगाहें देख लेती हैं
बताओ क्या कभी, एहसास को भी देखा जाएगा

क़सम खाना, कभी सौगंध लेना सबको आता है
सभी के धर्म पर विश्वास को भी देखा जाएगा

मशीनें आ गई हैं आदमी की सोच पढ़ने को
सुना हैं आदमी की आस को भी देखा जाएगा

अभी तक राजशाही आपके लोगों ने देखी है
किसी दिन आपके संन्यास को भी देखा जाएगा

अनाजों की उपज घटती रही यूंही अगर तो फिर
मियाँ इक रोज़ सूखी घास को भी देखा जाएगा

'मयंक' इस बार सच बोलेंगे हम अंजाम जो भी हो
चलो इस बार कारावास को भी देखा जाएगा

¼124½

केकड़े, कछुए, मगरमछ, मछलियाँ
पूछते हैं अब किधर हैं कश्तियाँ

छत के ऊपर प्यास के मारे हुए
बाढ़ में डूबी हुई हैं बस्तियाँ

एक धुंधली सी चमक आँखों में है
फिर फ़लक पर छा गई हैं बदलियाँ

मैं दुखी हूँ दूसरों को देखकर
क्यों मेरे हिस्से में आईं चुप्पियाँ

ये इसे मिल-जुल के ही ले जाएंगी
एक दाना और इतनी चींटियाँ

दूर से कुछ भी नज़र आता नहीं
किस धुएँ से भर गई है वादियाँ

याद करता है मुझे कोई 'मयंक'
आज मुझको आ रही है हिचकियाँ

¼125½

आदमी अब इतना बेईमान क्यों है
इन दिनों सच्चाई से अन्जान क्यों है

जाने कितनी हैं तमन्नाएँ जहाँ में
हमको इस दौलत का ही अरमान क्यों है

दुख नहीं इसका कि हम जैसे पड़े हैं
बदतमीज़ों का यहाँ सम्मान क्यों है

जब कि कर्फ़्यू है न तूफ़ानों का ख़तरा
आज बस्ती इस तरह सुनसान क्यों है

फ़र्ज़ तो सब ही निभाते हैं यहाँ पर
चन्द लोगों का मगर गुणगान क्यों है

याद ही रखता है कब उपकार कोई
यार तू इस बात पर हैरान क्यों है

ए 'मयंक' इस दौर में हर आदमी का
रोटियों के वास्ते अपमान क्यों है

¼126½

सामना जब वक़्त का करना पड़ा
तब हमें सौ मर्तबा मरना पड़ा

तेरी मर्ज़ी थी, ये तेरा हुक्म था
पाप का मुझको घड़ा भरना पड़ा

मुझको मज़लूमों के आँसू याद आए
राह में जब भी कोई झरना पड़ा

मैं कभी डरता नहीं पर जाने क्यों
अपनी ही परछाईं से डरना पड़ा

जल रहा था देर से दीपक 'मयंक'
पीर उसकी थी, हमें हरना पड़ा

¼127½

जानते हो, जब कभी आलोचना करते हैं हम
तब किसी इंसान की अवमानना करते हैं हम

पारितोषक या पदक, सम्मान दुनिया दे न दे
उम्र भर फिर भी कला की साधना करते हैं हम

वो ज़माना और था, मिल-जुल के रहते थे कभी
अब पड़ोसी के दुखों की कामना करते हैं हम

नेक दिल इंसान का सम्मान करते ही नहीं
हाँ मगर पत्थर की पूजा-अर्चना करते हैं हम

देखते हैं दूर तक और सोचते हैं देर तक
व्यर्थ अपने मन को अकसर अनमना करते हैं हम

ईर्ष्या को, बैर को रखते हैं मन के आसपास
और अपनी पीर का बादल घना करते हैं हम

पाँव छू लेते हैं लोगों के 'मयंक' आदर के साथ
आज भी गंभीरता से बचपना करते हैं हम

¼128½

ज्ञान के जब सारे अक्षर आ गए
मेरे हिस्से में समंदर आ गए

उनकी आँखों में अँधेरा छा गया
हम अंधेरे में थे, बाहर आ गए

गाँव की उन्नति का सच जाहिर हुआ
नाम पर खेतों के बंजर आ गए

ये कलश पर, क्रास पर कल तक रहे
आज गुंबद पर कबूतर आ गए

सरहदों का ज़िक्र मत कीजे हुज़ूर
अब तो दुश्मन घर के अंदर आ गए

क़द मेरा कुछ कम हुआ है, बोलिए
लोग क्या धरती से ऊपर आ गए

नव वधू पीहर में बैठी ही रही
लड़के वाले लेके ज़ेवर आ गए

¼129½

आज के अख़बार में जो सुर्ख़ियाँ हैं
दर हक़ीक़त वो हमारी चुप्पियाँ हैं

मैं हूँ तोता, बोलना है जुर्म मेरा
मेरे हिस्से में क़फ़स की तीलियाँ हैं

ख़ुशनुमा पर्दे पड़े है सब घरों में
बंद दरवाज़ों के पीछे सिसकियाँ हैं

तू निहत्था आदमी है, क्या करेगा
धर्म के हाथों में भाले-बर्छियाँ हैं

एक भी निर्धन का आवेदन नहीं है
ये ज़मीदारों की भेजी अर्ज़ियाँ हैं

रोशनी कैसी, ये सरकारी जलन है
आँख वालों को बहुत दुश्वारियां हैं

तू 'मयंक' अपने गरेबाँ पर नज़र कर
तेरे अंदर कौन सी अच्छाइयाँ हैं

¼130½

देश को जिसकी ग़द्दारी से ख़तरा है
उसको सच की चिंगारी से ख़तरा है

इंटरनेट, मूवी, म्यूज़िक मत चिल्लाओ
नौजवान को बेकारी से ख़तरा है

सब कहते हैं ख़तरा है हुशियारों से
हम कहते हैं हुशियारी से ख़तरा है

मैं ग़ैरों की बात नहीं करता प्यारे
अपनों की दुनियादारी से ख़तरा है

प्यार को दुनिया लाख बताए रोग मगर
कौन कहे इस बीमारी से ख़तरा है

इन्सानों की बस्ती में इन्सानों को
सच बतलाऊँ, मक्कारी से ख़तरा है

अपने वतन में बच कर रहिए आप 'मयंक'
एक एक भ्रष्टाचारी से ख़तरा है

¼131½

अज़्म है तो कहकशाँ ले आइए
एक मुट्ठी आसमाँ ले आइए

बेगुनाही यूँ नहीं होगी नसीब
अपने हक़ में कुछ बयाँ ले आइए

रोटियाँ ऐसे नहीं मिलती कभी
पहले चूल्हे में धुआँ ले आइए

झूठे क़िस्से हो चुके अब तक बहुत
कोई सच्ची दास्ताँ ले आइए

इन बहारों से मिला ही क्या हमें
इनसे अच्छा है, खिज़ाँ ले आइए

ऐसी ख़ामोशी से हासिल कुछ नहीं
कम से कम, मुँह में ज़बाँ ले आइए

प्यार की ख़ातिर तरसता हैं 'मयंक'
या ख़ुदा, ख़्वाबों में माँ ले आइए

¼132½

सच तो यह है, मैं निकल कर आ गया
धूप के सहरा से चल कर आ गया

दीन दुखियों को नहीं मिलती पनाह
जुल्म फिर चेहरे बदल कर आ गया

है फ़लक पर कुछ अजब सी रोशनी
शाम सूरज फिर से ढलकर आ गया

नर्म लहजे की जहाँ थी गुफ़्तगू
तू वहीं पर ज़हर उगल कर आ गया

ऐसे मंज़र देखकर आया हूँ मैं
दिल मेरा बाहर उछल कर आ गया

आग से जलना सुना था शहर ने
बर्फ़ से भी कोई जल कर आ गया

अब सफ़र का शौक़ हैं किसको 'मयंक'
हर मुसाफ़िर गर्द मल कर आ गया

¼133½

बादशाहत का ज़माना अब कहाँ
दोस्तों, शाही ख़ज़ाना अब कहाँ

मुफ़लिसों की बस्तियाँ जलनी ही थीं
सर छुपाने का ठिकाना अब कहाँ

प्यार पहले था वतन के वास्ते
छोड़िए, क़ौमी तराना अब कहाँ

चक्र पर मछली तो अब भी है बंधी
लेकिन अर्जुन सा निशाना अब कहाँ

अब तो डी. जे. आ चुके हैं गाँव गाँव
ढोल पर गाना-बजाना, अब कहाँ

छत, कटोरी, मोखलों में कुछ नहीं
पंछियों का आबोदाना अब कहाँ

नफ़रतों की फ़स्ल देखी है 'मयंक'
प्यार का वो कारख़ाना अब कहाँ

¼134½

रोज़ उनके पाँव में सर भी झुका लेते हैं सब
फिर बग़ावत के लिए झण्डा उठा लेते हैं सब

कोई हिलने को भी अब तैयार होता ही नहीं
देश के निर्माण की क़स्में तो खा लेते हैं सब

आपको मालूम भी है कुछ किसानों की व्यथा
आँसुओं से मुफ़लिसी की फ़स्ल उगा लेते हैं सब

देश की रक्षा का जिन पर भार है, वो सारे लोग
उँगलियों पर देश को अकसर नचा लेते हैं सब

जिससे डरते हैं उसी को पूजते हैं बार बार
पत्थरों को भी यहाँ ईश्वर बना लेते हैं सब

कोई पूछे तो बताते ही नहीं अपनी दशा
और अपना दर्द सीने में दबा लेते हैं सब

सर 'मयंक' इन्सानियत का हमने रक्खा है बुलन्द
मेरी बस्ती में बुज़ुर्गो की दुआ लेते हैं सब

¼135½

यही दुख है सफ़र के बाद मंज़िल
नहीं होती थके पैरों को हासिल

मुझे चिंता हैं, ख़ुद को बदलूँ कैसे
शराफ़त से यहाँ जीना है मुश्किल

लगा है जिन पे बेअदबी का ठप्पा
अदब में अब वही चेहरे हैं दाख़िल

बुराई ख़त्म करना चाहता हूँ
बनाऊँ किस तरह मैं ताड़ को तिल

कहानी किस तरह अपनी सुनाऊँ
कि दो आँखें चुरा कर ले गईं दिल

मुझे सच बोलना था, सच ही बोला
उखड़ जाएगी अब यारों की महफ़िल

'मयंक' इस भीड़ में ढूंढोगे कैसे
बदल कर आ गया कपड़े जो क़ातिल

¼136½

चमकती उनकी आँखों में रहेगी रोशनी कब तक
हमारी आँखों से आख़िर रिसेगी यह नमी कब तक

हुकूमत अब तेरे एलान पर सब हँसने लगते हैं
बताओ ओढ़ कर बैठे रहें संजीदगी कब तक

किसानों का अंगूठा काग़ज़ों पर लग तो जाने दो
ज़मींदारों की अपने गाँव में दरियादिली कब तक

कहीं ऐसा न हो अस्तित्व इनका ख़त्म हो जाए
हमेशा काग़ज़ों पर साफ़ होगी हर नदी कब तक

कोई एक ऐसा दुश्मन ढूँढ कर लाओ जो दाना हो
करूँ नादान लोगों से बताओ दोस्ती कब तक

यहाँ गुटबाज़ियाँ, तोहफ़े, कमीशन के नज़ारे हैं
अदब के नाम पर होगी यहाँ सौदागरी कब तक

गवैये, भांड, अभिनेता ही सब को रास आए हैं
'मयंक' इस दौर में बोलो बचेगी शायरी कब तक

¼137½

क्या बेहतर है, फ़ाक़ा कर लें
या फिर उनका सजदा कर लें

आज़ादी है और गुलामी
किस से अपना रिश्ता कर लें

अपना सच लोगों को भाया
हमने सोचा सौदा कर लें

छोटा सा जीवन है, इस में
यह बतलाओ, क्या क्या कर लें

तन का क्या है धुल जाएगा
पहले मन तो अच्छा कर लें

होड़ लगी है इस दुनिया में
कैसे पैसा पैदा कर लें

अब 'मयंक' सोचा है हम ने
राजनीति का धंधा कर लें

¼138½

सब तो होशियार हो गए
सिर्फ़ हम गँवार हो गए

उसने एक जाल फिर बुना
लोग फिर शिकार हो गए

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद
अब से सद्विचार हो गए

नाव नोटों की बनाइए
कितने लोग पार हो गए

धन मिला, उगी समाधियाँ
सैकड़ों मज़ार हो गए

घिर गए मुसीबतों में जब
सेठ जी उदार हो गए

सत्य की विजय हुई मगर
दुख 'मयंक' यार हो गए

¼139½

तब ऊँची थी नाक हमारी
अब उड़ती है ख़ाक हमारी

यह जो खिड़की का पर्दा है
पहले थी पोशाक हमारी

सिक्का पहले भी चलता था
हाँ ऐसी थी धाक हमारी

चकरा कर तुम गिर जाओगे
देखोगे ख़ूराक हमारी

हम किसको अच्छे लगते हैं
भाषा है बेबाक हमारी

रहते हैं तनहाई में हम
आ जाती हैं डाक हमारी

शुक्र 'मयंक' है रब का उसने
कर दी हस्ती पाक हमारी

¼140½

कहाँ जादू-तमाशे बोलते हैं
अब इस दुनिया में पैसे बोलते हैं

नई तहज़ीब ने क्या दिन दिखाये
बड़ों के आगे बच्चे बोलते हैं

अमीर इंसान या मुफ़लिस है कोई
ज़बाँ से पहले कपड़े बोलते हैं

बड़ाई ख़ुद नहीं करते वो अपनी
बड़े लोगों के चमचे बोलते हैं

हमेशा चुप रहे नोटों के बंडल
मगर दो चार सिक्के बोलते हैं

मेरी आवाज़ दिल्ली जाये कैसे
वहाँ तो अच्छे अच्छे बोलते हैं

'मयंक' आदाब कहने पर वो बोले
ये भाषा तो लफ़ंगे बोलते हैं

¼141½

मिट गए सब निशान बारिश में
धुल गया आसमान बारिश में

उम्र के साथ गल रहा हूँ मैं
जैसे कच्चा मकान बारिश में

माँ उन्हें छत पे रख के भूल गई
हैं सभी मर्तबान बारिश में

बाढ़ पीड़ित नहीं तमाशा हैं
एक के बाद एक विमान बारिश में

पेट की आग लाई कचरे तक
देख नन्ही सी जान बारिश में

खेत में जान पड़ गई जैसे
कितना ख़ुश है किसान बारिश में

आस मत बाँधिए 'मयंक' अभी
कौन देगा ज़बान बारिश में

¼142½

अब ख़ुद में रीढ़ रखने को तैयार कौन है
मुझको बताओ शहर में ख़ुद्दार कौन है

झूठे बहाने करते हैं आराम के लिए
सब तंदुरुस्त हैं यहाँ बीमार कौन है

सुनता हूँ इस पे बहस हुई है तमाम रात
मक्कार कह रहा था कि मक्कार कौन है

जो कुछ कहा वो मान लिया, यह बताओ अब
तुम तो वफ़ा के पुतले हो, ग़द्दार कौन है

पैसा, ज़मीन, फ़स्ल, कोई बात ही नहीं
झगड़ा है ये, क़बीले का सरदार कौन है

किसने वतन में आग लगाई, बताइए
किसने सजाए लूट के बाज़ार, कौन है

इंसान इस तरफ़ तो दरिंदा हैं उस तरफ़
बोलो 'मयंक' दोनों में ख़ूख़्वार कौन हैं

¼143½

अब धूप निकलने वाली है
और बर्फ़ पिघलने वाली है

सब आस लगाए बैठे हैं
तक़दीर बदलने वाली है

मैं झूठ नहीं बोलूँगा मगर
सच्चाई तो खलने वाली है

उम्मीद की रेत है मुट्ठी में
हाथों से फिसलने वाली है

शोला है मेरे तन की मिट्टी
अंगारों पे चलने वाली है

फुसलाओ इसे, पुचकारो इसे
यह दुनिया बदलने वाली है

कैसी हैं 'मयंक' इंसाँ की ज़बाँ
हर भेद उगलने वाली है

¼144½

वो चाहते हैं, इशारों से काम चल जाए
उगे न चाँद, सितारों से काम चल जाए

मिले निजात कभी सोचने की आदत से
कभी किसी के विचारों से काम चल जाए

उसे हैं कौन ज़रूरत ख़ुदा की, ईश्वर की
वो जिसका मठ से, मज़ारों से काम चल जाए

तुम्हें तो लाखों-करोड़ों के ख़्वाब आते हैं
हमारा क्या हैं, हज़ारों से काम चल जाए

नदी में डूब के तुम रेत छानते क्यों हो
इधर तो आओ, किनारों से काम चल जाए

जतन करो, ज़रा मेहनत करो तो मुमकिन है
वतन में चंद सुधारों से काम चल जाए

'मयंक' मुझको विधाता न दे, मगर मेरा
अवध के राजकुमारों से काम चल जाए

¼145½

माथे पर है चन्दन टीका
भाव हृदय का फीका फीका

बात नहीं सुनता है कोई
हर कोई है मन मर्ज़ी का

मुझको भी हँसना आता है
अवसर भी तो आए ख़ुशी का

चाहो तो तुम भी लगवा लो
एक इंजेक्शन हमदर्दी का

लोग गुलामी में ज़िंदा हैं
हाल न पूछो आज़ादी का

रूखी सूखी खाने वाले
माँग रहे हैं तड़का घी का

बोलें तो 'मयंक' आफ़त है
चुप रहना जंजाल है जी का

¼146½

नाटक दिखलाने वाले हैं
चेहरे बतियाने वाले हैं

किस से कोई बात करे अब
सब दुखड़ा गाने वाले हैं

एक जरा सी ग़लती क्या की
लाखों समझाने वाले हैं

आसमान से आस न रक्खो
ये बादल जाने वाले हैं

बुद्धिमान आए हैं, तो क्या
गुत्थी सुलझाने वाले हैं

सुनते सुनते कान पक गए
अच्छे दिन आने वाले हैं

तुम 'मयंक' मथुरा के हो तो
हम भी बरसाने वाले हैं

¼147½

क्या कहें, विश्वास घायल है
देश का इतिहास घायल है

खेत, फ़सलें, पेड़, पौधे, क्या
आज सूखी घास घायल है

पेट में रोटी न सर पर छत
मुफ़लिसों की आस घायल है

लापता पिछले बरस भी था
इस बरस मधुमास घायल है

ख़ून के, आँसू के धब्बों से
यूँ लगा रनिवास घायल है

जातिवादी, मज़हबी हमले
आज तक रविदास घायल है

युद्ध जीवन है 'मयंक' अपना
युद्ध का अभ्यास घायल है

¼148½

गर्मियों के दिन गए, मौसम सुहाना आ गया
यूँ लगा जैसे कि ख़ुशियों का ज़माना आ गया

चार दिन से गुल है बिजली आप जाकर पूछिये
क्या अमीरों को पसीने में नहाना आ गया

जो कभी चिंता थी हम पर, अब वो तुम पर आ गयी
हम बहुत ख़ुश हैं तुम्हें भी तिलमिलाना आ गया

कब तलक आँसू बहाते, अपनी बदहाली पे सब
आज अपनी क़ौम को हँसना-हँसाना आ गया

मैंने देखे रात में बादल, सितारे, चाँद भी
यूँ लगा जैसे फ़लक पर शामियाना आ गया

ज़िन्दगी संघर्ष है, संघर्ष ये जीता मैं तब
जब मुझे फ़ुटपाथ पर बिस्तर बिछाना आ गया

बस 'मयंक' अपना तो कारोबार है धरती से प्यार
और तुम्हें इस प्यार से पैसे कमाना आ गया

¼149½

ख़ुशनुमा उजालों की बात कीजिये ही मत
प्यार करने वालों की बात कीजिये ही मत

हो सके तो मौसम का अच्छा रुख़ ही दिखलाएँ
बाढ़ की, अकालों की बात कीजिये ही मत

बात उठी, ग़रीबों की तो कहा ये हाकिम ने
हड्डियों की, खालों की, बात कीजिये ही मत

जो ग़ुलामी से लेकर आज तक सताते हैं
आप उन सवालों की बात कीजिये ही मत

फूल जैसे चेहरों का देश में है विज्ञापन
सूखे, पिचके गालों की बात कीजिये ही मत

हम ग़रीब हैं लेकिन थोड़ी अक़्ल रखते हैं
शकुनि जैसी चालों की बात कीजिये ही मत

सब 'मयंक' लौटे हैं मंज़िलों को तय करके
पाँव पाँव छालों की बात कीजिये ही मत

¼150½

इक नई पहचान ले कर क्या करें
बोलिए सम्मान ले कर क्या करें

रोटियाँ होती तो खा लेते मगर
ज्ञान और विज्ञान लेकर क्या करें

कौन इज़्ज़त है यहाँ साहित्य की
सूर या रसखान लेकर क्या करें

यार इससे पेट तो भरता नहीं
एक बीड़ा पान लेकर क्या करें

रुपए होते तो काम आते मेरे
व्यर्थ का गुणगान लेकर क्या करें

कह रहे हो, हम पे मर जाओगे तुम
हम तुम्हारी जान लेकर क्या करें

अन्न तो सूखे ने खा डाला 'मयंक'
चार मुट्ठी धान लेकर क्या करें

¼151½

धर्म की नगरी में क्या क्या हो रहा है
धर्म ख़ुद को आँसुओं से धो रहा है

जानवर ने अपनी फ़ितरत ही न बदली
आदमी तो अहमियत भी खो रहा है

फ़स्ल बोना ख़ून देना है, किसान अब
काट कर अपना कलेजा बो रहा है

तेज़ सड़कें, फ़्लाईओवर, माल तक हैं
यह बताओ फ़ायदा किसको रहा है

रिश्ते, नाते, दोस्ती और दुश्मनी तक
देखिये इंसान क्या क्या ढो रहा है

आदमी तो मुफ़्त में बदनाम ठहरा
वक्त भी सामंतवादी तो रहा है

ये 'मयंक' इस दौर की है शाम लेकिन
ये हमारा शहर अब तक सो रहा है

¼152½

बहुत ही बेख़बर बंदे हैं भाई
ये कच्ची शाख़ पर बैठे हैं भाई

कहीं काँटे नज़र आते हैं भाई
कहीं पर सिर्फ़ गुलदस्ते हैं भाई

तुम इनका हाल हमको मत बताओ
हमे मालूम है कैसे हैं भाई

अभी ज़िंदा हो तो इमदाद कैसी
मियाँ कांधा लगा देते हैं भाई

मुझे माँ-बाप की चिंता लगी है
समझना ये है क्या कहते हैं भाई

अचानक रुख़ बदल जाता है इनका
कभी कड़वे कभी मीठे हैं भाई

'मयंक' अब डर से बाहर आ गया हूँ
बताओ किस जगह बसते हैं भाई

¼153½

तुम शब्दों में आँधी पानी ले आए
आख़िर अपनी प्रेम कहानी ले आए

आईनों के अंदर बेहद फुर्ती थी
चेहरे लेकिन आनाकानी ले आए

क्या अब भी वो आग तुम्हारे दिल में हैं
तुमने जो मन में थी ठानी, ले आए

भीख मांगना, पैदल चलना मुश्किल था
लोग अपने कंधो पर दानी ले आए

घुटनों के बल उनके दर पर जा बैठे
माथा टेका और सुलतानी ले आए

देखो बादल कितने अच्छे होते हैं
रेगिस्तानों में भी पानी ले आए

दास-बांदियों के ही क़िस्से अच्छे थे
क्यों 'मयंक' तुम राजा रानी ले आए

¼154½

रात ढलती जा रही थी
आख़री बस जा चुकी थी

दूर तक कोई नहीं था
मैं था मेरी बेख़ुदी थी

चाँद बदली में छुपा था
झुरमुटों में चाँदनी थी

मैं ने उस से वक्त पूछा
वो जरा सा डर गई थी

अश्क थे आँखों में उसकी
या कोई ठहरी नदी थी

दूर तक चलते रहे हम
देर तक बस ख़ामुशी थी

फिर सवेरा उग रहा था
हमको पहली बस मिली थी

फिर 'मयंक' आया मैं घर तक
शायद उसको भी ख़ुशी थी

¼155½

तेरी दुनिया में कितने पल देखें
आज देखें कि गुज़रा कल देखें

पीठ पीछे का वार, सोचें मत
आप अपनी अग़ल बग़ल देखें

पिछले युग में थे जो वही परिवार
आज भी कर रहे हैं छल, देखें

शोले भरना बहुत जरूरी है
कब तलक आँख आँख जल देखें

सब है थाली के बैंगन इस युग में
इन दिनों कौन है अटल, देखें

पहले इस देश में थे दो ही दल
इन दिनों गाँव गाँव दल देखें

काई है और गंदगी है 'मयंक'
कौन सी झील में कमल देखें

¼156½

इरादा आज़माना ही नहीं था
सफ़र में हम को जाना ही नहीं था

बुलाने से नहीं था फ़ायदा कुछ
पलट कर उसको आना ही नहीं था

तुम्हीं अच्छे थे, वापस लौट आए
तुम्हें तो मुँह की खाना ही नहीं था

किसानों की नज़र आकाश पर थी
मगर बादल को छाना ही नहीं था

मैं क्या करता, मेरे तेवर भी बदले
शराफ़त का ज़माना ही नहीं था

हवा बेकार आँधी बन रही थी
हमें दीपक जलाना ही नहीं था

'मयंक' अपना किसे कहते जहाँ में
किसी से दोस्ताना ही नहीं था

¼157½

सब आलसी हैं, किसको यहाँ काम चाहिए
हम को पता है लोगों को आराम चाहिए

ऐसे ही लोग इन दिनों महफ़िल की शान हैं
पीने का कुछ शऊर नहीं, जाम चाहिए

हम लोग अम्न से हैं मगर कुछ सफ़ेद पोश
कहते हैं, सारे देश में कुहराम चाहिए

हम से उजाले छीन के सरकार ने कहा
अंधों को जगमगाती हुई शाम चाहिए

पहले ये चीज़ होती थी ख़ुद्दार के लिए
अब पाँव छूने वालों को इनआम चाहिए

इन्सान हो, वफ़ा हो, दुआ हो कि ताजो तख़्त
हर चीज़ बिकने वाली है बस दाम चाहिए

यह भी 'मयंक' आज के लोगों की सोच है
आग़ाज़ तो हुआ नहीं, अंजाम चाहिए

¼158½

इन्सान थे, रिश्ते थे, मेरा कुछ भी नहीं था
शायद मेरी क़िस्मत में लिखा कुछ भी नहीं था

माँ मुझको मिली, भाई को हिस्से में हवेली
मेरे लिए अब इससे बड़ा कुछ भी नहीं था

दुनिया में जब इन्सानों पे आई थी मुसीबत
उस दौर में सौतेला, सगा, कुछ भी नहीं था

मर जाएँ तो जन्नत के मज़े लूट लें शायद
दुनिया में तो जीने का मज़ा कुछ भी नहीं था

क़दमों पे तेरे सर को झुका देता मैं कैसे
यह काम ज़लालत के सिवा कुछ भी नहीं था

क्यों पलकें झपकने की अदा भूल गई हैं
मैं ने तेरी आँखों से कहा कुछ भी नहीं था

बाज़ू से 'मयंक' अपने कमाई है ये दौलत
क़िस्मत की लकीरों से मिला कुछ भी नहीं था

¼159½

वतन से आप ने जिस चीज़ को निकाला है
बताइए वो अँधेरा है या उजाला है

जिसे भी देखो नज़र आता है वही सुलतान
हर एक शख़्स यहाँ पर रसूख़ वाला है

इसी को कहते हैं माहौल का असर शायद
सियाही छोड़ो, सफ़ेदी का मुँह भी काला है

यहाँ तो झूठ की होती है रोज़ जय जयकार
मुझे बताओ किधर सच का बोलबाला है

मैं गूँगा हो गया और तू अपाहिजों की तरह
मेरी ज़बान पे और तेरे पाँव छाला है

मुझे ए मौत, बहानों से इस तरह मत टाल
बड़े जतन से अभी ज़िन्दगी को टाला है

वो अब अमीर हैं, मिलते हैं अजनबी की तरह
'मयंक' हम ने जिन्हें मुफ़लिसी में पाला है

¼160½

दुकानें, घर, ज़मीनें शामियाने भी किराए पर
इसी दुनिया में अब मिलते हैं चेहरे भी किराए पर

किसी मुफ़लिस की शादी में कोई अड़चन नहीं है अब
मुहल्ले में मिला करते हैं गहने भी किराए पर

जनाज़ा हो कि अर्थी हो, पड़े रहने नहीं देगें
बुलाकर लाएगें हम लोग कन्धे भी किराए पर

बजट गाँधी जयन्ती का तो काग़ज़ पर दिखाना है
उठा लाए हैं नेताजी ये चरख़े भी किराए पर

पतीले, देग़, करछल जग, कड़ाही और पन्डित जी
तुम्हें मालूम है, मिलते हैं चूल्हे भी किराए पर

मुकुट, तलवार, पगड़ी, शेरवानी ही नहीं मिलते
कफ़न के वास्ते पाओगे कपड़े भी किराए पर

हुआ ही क्या, कोई रिश्ता 'मयंक' उसने अगर तोड़ा
सुना है इन दिनों होते हैं रिश्ते भी किराए पर

¼161½

तन्हाई में बीते दिन याद आते हैं
याद आते हैं और हमें ललचाते हैं

आओ अब दुश्मन को दोस्त बनाया जाए
अपनों से रोज़ाना धोखे खाते हैं

पुरवाई का ज़िक्र छिड़ा है महफ़िल में
सब अपनी अपनी चोटें सहलाते हैं

सुख के आने जाने का एहसास नहीं
दुख के दिन तो जाते जाते जाते हैं

इनका, उनका, सबका गाने वाले लोग
उनका भी तो गाएँ, जिनका खाते हैं

ख़ून-पसीना बहता है कुछ लोगों का
मुद्दत से कुछ लोग यहाँ सुस्ताते हैं

बेमतलब हैं सूरज, तारे और 'मयंक'
बादल ही सावन भादों बरसाते हैं

¼162½

रात गुज़री है तो मंज़र देखिए
बुझ रहे हैं टिम-टिमाते कुछ दिए

भूख बढ़ती जा रही है आप की
चाहिए तो देश ही खा जाइए

हार में तो आप ही का दोष था
दूसरों पर ठीकरा मत फोड़िए

एक सेल्युलर फ़ोन क्या पैदा हुआ
अब नज़र आते नहीं हैं डाकिए

क़ैद ख़ाने तोड़िएगा बाद में
पहले ज़ंजीरें तो अपनी तोड़िए

तुम सियासी हो तो काग़ज़ भी तुम्हीं
जब कि बाक़ी नाम होंगे हाशिए

दूसरों को बाँटिए, लेकिन 'मयंक'
अपने बारे में भी थोड़ा सोचिए

¼163½

है कुछ मतलब, तराशे जा रहे हैं
इधर जो रब तराशे जा रहे हैं

न जाने कब से पथराए पड़े थे
मगर हम अब तराशे जा रहे हैं

फ़लक है सुर्ख़, शायद आसमाँ पर
किसी के लब तराशे जा रहे हैं

ग़ज़ब है, कीमती पत्थर यहाँ पर
बहुत बेढब तराशे जा रहे हैं

पड़े हैं राह में जो दूसरों की
वो पत्थर कब तराशे जा रहे हैं

नज़र आती नहीं सूरत किसी की
अभी तो सब तराशे जा रहे हैं

'मयंक' अब हाल मत पूछो हमारा
हमीं जब तब तराशे जा रहे हैं

¼164½

कैसा दाना, कैसा पानी
पंछी राह चला अनजानी

सच की राह कठिन होती है
लोग करेंगे आनाकानी

बुढ़िया चर्ख़ा कात रही है
कौन सुने अब चाँद कहानी

विष तो अमृत हो सकता था
मीरा, कृष्ण की थी दीवानी

देश की हालत क्या बतलाऊँ
व्यर्थ शहीदों की क़ुर्बानी

मेरी ग़रीबी मिट सकती थी
मैंने मन की बात न मानी

सब 'मयंक' इस पर क़ायम हैं
सबसे अच्छी बेईमानी

¼165½

होश खोया है, बदहवास नहीं
मैं तुम्हारी तरह उदास नहीं

तुम में, मुझ में यही तो अंतर है
प्यास मेरी लहू की प्यास नहीं

ताल, लय, छंद इस में मत ढूंढो
युद्ध तो युद्ध है, ये रास नहीं

प्यार से बोलो, जान दे दूंगा
दोस्त हूँ मैं, तुम्हारा दास नहीं

स्वार्थ की घुल गई है कड़वाहट
यार इस चाय में मिठास नहीं

मुझको दो गज़ ज़मीन देगी मौत
ज़िन्दगी से ज़रा भी आस नहीं

जानवर तो 'मयंक' मिलते हैं
आदमी कोई बेलिबास नहीं

¼166½

चार पैसों की कमी तो है
और सब कुछ ठीक ही तो है

चंद रातें कट ही जाएँगी
चार दिन की चाँदनी तो है

यार घड़ियाली सही लेकिन
उसकी आँखों में नमी तो है

यह ख़बर अच्छी लगी सब को
आपको शर्मिंदगी तो है

माँ ने फिर बेटी को समझाया
शक्ल क्या है, वो धनी तो है

भूख से लड़ कर मरे बापू
पर हवन में शुद्ध घी तो है

मैं 'मयंक' इस बात पर ख़ुश हूँ
मेरे बच्चों में ख़ुशी तो है

¼167½

धूप का तल्ख़ तेवर बदल जाएगा
शाम को तपता सूरज भी ढल जाएगा

गिरने वाला तमाशा नहीं है कोई
गिरने वाला किसी दिन संभल जाएगा

सबसे पीछे खड़ा है जो इक आदमी
देखना सब से आगे निकल जाएगा

अपनी माँगे तो रख दूँगा दरबार में
कितने लोगों को ये लहजा खल जाएगा

यह बग़ावत है बस बीस या तीस दिन
उनकी बातों का जादू तो चल जाएगा

मशवरा गर दिया मैं ने सुलतान को
मेरी बातें सुनेगा, उछल जाएगा

क्रांति की आग जिस दिन उठेगी 'मयंक'
देख लेना इलाक़ा दहल जाएगा

¼168½

इसी मोड़ पर था ठिकाना मेरा
मगर उठ गया आबोदाना मेरा

मेरी चूक से जीते दुश्मन मेरे
कभी तो लगेगा निशाना मेरा

समझदार होते हैं नादान भी
समझ ही गए मुस्कुराना मेरा

मैं उजड़ा हुआ और कंगाल हूँ
बिगाड़ेगा अब क्या ज़माना मेरा

इसी शहर में कितना मशहूर था
कभी उँगलियों पर नचाना मेरा

ये घर एक जन्नत था मेरे लिए
यही बन गया क़ैदख़ाना मेरा

'मयंक' आज तक याद है वो मुझे
तेरा रूठना और मनाना मेरा

¼169½

मेरे दुश्मन हार लेकर आए हैं
दोस्त लेकिन ख़ार लेकर आए हैं

सारी दुनिया फँस गई है जाल में
वो कला मक्कार ले कर आए हैं

भीड़ तो आई है लेकर डिग्रियाँ
इल्म तो दो चार लेकर आए है

जिन पे है इस देश की रक्षा का भार
वह भी पहरेदार लेकर आए हैं

मुझको घुटने टेकना आता नहीं
लोग तो दीनार लेकर आए हैं

एक तिनका टूटता जिनसे नहीं
आज वो तलवार ले कर आए हैं

वेष बदला सारे चेहरों ने 'मयंक'
अब नई सरकार ले कर आए हैं

¼170½

जो भी ख़ुदा के बन्दों की महफ़िल से दूर था
वह आदमी यक़ीन की मंज़िल से दूर था

मरने के बाद सबको मिली नींद चैन की
दुनिया में कोई शख़्स भी मुश्किल से दूर था

मजबूर ही था जंग में, बुज़दिल नहीं था मैं
लड़ता भी कैसे अपने मुक़ाबिल से, दूर था

कैसे दिलो-दमाग़ के नज़दीक आ गया
एक आदमी कभी जो मेरे दिल से दूर था

इंसान और ख़ुदा के फ़रिश्तों में फ़र्क़ है
यह इल्म सबके पास था, जाहिल से दूर था

नज़दीक रहने वालों पर आई न कोई आँच
लेकिन मरा वही कि जो क़ातिल से दूर था

दरिया की लहरें जिस घड़ी तूफ़ान थीं 'मयंक'
मेरा सफ़ीना उस घड़ी साहिल से दूर था

¼171½

सब की संगत से दूर बैठे हैं
हम हक़ीक़त से दूर बैठे हैं

उनको दुनिया से वास्ता ही क्या
जो मुहब्बत से दूर बैठे हैं

जंग लड़ने का हौसला ही नहीं
लोग हिम्मत से दूर बैठे हैं

ठोकरें खाई, अक्ल आई तब
अब हिमाक़त से दूर बैठे हैं

आप ने लहजा ही बदल डाला
क्या रवायत से दूर बैठे हैं

हम ने दौलत को मार दी ठोकर
शानो-शौकत से दूर बैठे हैं

कैसे बन्दे 'मयंक' हैं उसके
उसकी रहमत से दूर बैठे हैं

¼172½

वार तो भरपूर होना चाहिए
शीशा चकनाचूर होना चाहिए

माँगता है भीख सारे शहर से
वो, जिसे मज़दूर होना चाहिए

मिल गई है उसको दौलत बेशुमार
अब उसे मग़रूर होना चाहिए

रहमतें रब की हैं इस बस्ती पे तो
चेहरा चेहरा नूर होना चाहिए

सब मसीहा कह रहे हैं क्यों तुम्हें
दर्द तो काफ़ूर होना चाहिए

आप राजा, हम प्रजा, कब तक हुज़ूर
कुछ नया दस्तूर होना चाहिए

कैसे गुमनामी में बैठे हो 'मयंक'
तुम को तो मशहूर होना चाहिए

¼173½

रात कुछ ऐसे बसर हो जाए
एक करवट में सहर हो जाए

ऐ ख़ुदा तू ने मकाँ मुझको दिया
अब दुआ है कि ये घर हो जाए

क्या ज़रूरी है हमारे ग़म की
सारी दुनिया को ख़बर हो जाए

वक़्त पर अपनी नज़र है, ऐ काश
वक़्त की हम पे नज़र हो जाए

तेरी मर्ज़ी हो तो यह मुमकिन है
मेरा हर ऐब हुनर हो जाए

उम्र भर फिर नहीं बोलूँगा मैं
गुफ़्तगू तुझ से अगर हो जाए

इंतज़ार अब नहीं होता है 'मयंक'
अब तो रहमत का असर हो जाए

¼174½

अब किसको ईमान चाहिए
रुतबा, दौलत, शान चाहिए

हर मंज़िल मैं तय कर लूँगा
थोड़ा इत्मीनान चाहिए

चोर, लुटेरे, डाकू, ढोंगी
इनको भी सम्मान चाहिए

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
बोलो क्या पहचान चाहिए

तुमको सुनकर हैरत होगी
हर मुर्दे को जान चाहिए

ए.के. छप्पन हो तो दे दो
किसको तीर कमान चाहिए

सब 'मयंक' ग़द्दार हैं फिर भी
सब को जीवनदान चाहिए

¼175½

जिसको हासिल तेरी रहमत का सहारा हो गया
कश्तियाँ लहरें बनी, तूफ़ाँ किनारा हो गया

थोड़ी हाकिम की मदद और थोड़े से काग़ज़ के नोट
अब हमारे गाँव का बंजर हमारा हो गया

शायद उल्टी धार से बहने लगे सागर यहाँ
हर नदी का जल समंदर जैसा खारा हो गया

कुछ ज़मीनों की कमी, कुछ राहतें, कुछ सस्तापन
आज रेगिस्तान भी लोगों को प्यारा हो गया

हर कहीं लाठी, लहू, चाकू, छुरी, दंगा, फ़साद
आप कहते हैं कि क़ायम भाईचारा हो गया

लोग छप्पन भोग खा कर भी नहीं हैं मुत्मइन
और अपना सूखी रोटी पर गुज़ारा हो गया

मेरी बस्ती में अचानक जल उठी नफ़रत की आग
इस तरफ़ शायद 'मयंक' उनका इशारा हो गया

¼176½

बहुत चुप है, बहुत सुनसान दुनिया
लगा बैठी है शायद ध्यान दुनिया

हुनर था, हौसला था, आदमी थे
मगर क्या कर सकी बेजान दुनिया

नई तहज़ीब में पहला क़दम था
अभी से हो गई हलकान दुनिया

परख कर देख ले अपनी नज़र से
मेरी आँखों से मत पहचान दुनिया

मुहब्बत के सहारे दिन गुज़ारें
लगेगी आपको वरदान दुनिया

तुम्हारी कुछ कमी होगी यक़ीनन
तुम्हें लगती है जो तूफ़ान दुनिया

पहेली इस की हल कर ली है मैं ने
'मयंक' अब हो गई आसान दुनिया

¼177½

यहाँ तो मुकम्मल सदी लापता है
अजब दौर है, आदमी लापता है

अचानक किधर जा बसे मेरे अपने
जिसे ढूँढता हूँ, वही लापता है

सफर के लिए है ज़रूरी इरादा
कभी सामने है, कभी लापता है

हुज़ूर आप किस पर भरोसा करेंगे
ज़माने से अब दोस्ती लापता है

अँधेरे हमें रास आने लगे हैं
ज़माना हुआ, रोशनी लापता है

दुशासन की चिंता, हरे चीर कैसे
सभा में हैं सब, द्रौपदी लापता है

ये मेले, ये त्योहार सब कुछ है लेकिन
'मयंक' आज अपनी ख़ुशी लापता है

¼178½

वो जब अपनों का दमन करने लगे
इंतज़ार अपने नयन करने लगे

साधना में डर भी शामिल हो गया
जाप हम भी, मन ही मन करने लगे

शोध अब होने लगा है शून्य पर
लोग किसका आकलन करने लगे

ज्ञान लेकर आया था मैं इस जगह
आप कपड़ों से चयन करने लगे

अपने अंदर झाँक कर देखा नहीं
सब के सब रावण दहन करने लगे

इसको दंगा मत कहो, यह यज्ञ है
अब अधर्मी भी हवन करने लगे

हम न सुधरे थे, न सुधरेंगे 'मयंक'
व्यर्थ तुम चिंतन मनन करने लगे

¼179½

पहले तो ख़ूराक छोड़ दी
फिर उसने पोशाक छोड़ दी

तुम इन सन्तों से यह पूछो
क्या हरकत नापाक छोड़ दी

किसको देशभक्त कहते हो
जिसने वतन की ख़ाक छोड़ दी

कब तक ढोता पुण्य की आदत
मैं भी था चालाक, छोड़ दी

अब मेरी बोली मीठी है
सच्चाई बेबाक छोड़ दी

कितनी मँहगी हो गई मिट्टी
अब कुम्हार ने चाक छोड़ दी

कविता से लोगों के ऊपर
फिर 'मयंक' ने धाक छोड़ दी

¼180½

उसी की दुश्मनी जम कर ठने भी
फिर उससे दोस्ती गहरी छने भी

इसी दुनिया ने क्या क्या दिन दिखाए
चबाए हमने लोहे के चने भी

भगत, आज़ाद हों तो देश सुधरे
कोई माँ ऐसे बच्चे फिर जने भी

वो गोवर्धन प्रतीक्षा कर रहा है
कोई घनश्याम के जैसा बने भी

समूचा पेड़ खा जाते हैं कुछ लोग
ये पत्ते, फूल, फल, शाखें, तने भी

मुहब्बत आए, नफ़रत दूर जाए
यहाँ माहौल कुछ ऐसा बने भी

'मयंक' इस की सफाई कितनी कर लो
मगर यह जिस्म मिट्टी में सने भी

¼181½

कोई भी काम ख़्वामख़्वाह नहीं
क़त्ल करना भी अब गुनाह नहीं

इत्र, अगरबत्ती मैं नहीं करता
यह मेरा घर है, ख़ानक़ाह नहीं

रंग बेशक हमारा काला है
दिल हमारा मगर सियाह नहीं

गर कमी है तो मैं बताऊँगा
यह मुहब्बत है, कोई डाह नहीं

इश्क़ की, प्यार की, मुहब्बत की
कितनी गहरी नदी है, थाह नहीं

क़ैस, फ़रहाद, रांझा पागल थे
प्यार में अब कोई तबाह नहीं

मेरे अलफ़ाज़ सुन तो लीजे 'मयंक'
एक शायर हूँ, तानाशाह नहीं

¼182½

खुले आसमानों में थे उन दिनों
परिन्दे उड़ानों में थे उन दिनों

सिले होंठ वाले, ज़बानें कटी
यही हक़ बयानों में थे उन दिनों

वही हाल अब भी है इस देश का
मगर हम जवानों में थे उन दिनों

ख़ुशामद न फ़िरक़ापरस्ती, न छल
ये सब दास्तानों में थे उन दिनों

कहीं कोई फ़ितना, धमाका, न आग
ख़ुदा कारख़ानों में थे उन दिनों

जो ऊँचाई पर है ख़ुदा की तरह
वो इन्साँ ढलानों में थे उन दिनों

'मयंक' इस घुटन में भी ज़िंदा हैं हम
हमीं इत्रदानों में थे उन दिनों

¼183½

देह के व्यापार की क़लई खुली
और थानेदार की क़लई खुली

इतना बेइज़्ज़त तो बेइज़्ज़त न था
आज इज़्ज़तदार की क़लई खुली

वो तो अब भी चैन की लेते हैं सांस
कब किसी ग़द्दार की क़लई खुली

चेहरा चेहरा था यहाँ हैरतज़दा
जिस घड़ी फ़नकार की क़लई खुली

जेब ख़ाली हो गई मेरी मगर
शहर के बाज़ार की क़लई खुली

भक्त पत्थर ले के आए है यहाँ
देखिए अवतार की क़लई खुली

सिर्फ़ पैसों का तमाशा है 'मयंक'
हम पे हर त्योहार की क़लई खुली

¼184½

यहाँ पत्थर भी मिलता है, यहाँ शीशा भी मिलता है
इसी दुनिया में हम लोगों को समझौता भी मिलता है

यहाँ के लोग दानी है, मदद बिलकुल नहीं करते
फ़क़ीरी ओढ़ कर देखो अगर सिक्का भी मिलता है

नज़र आते है कुछ इंसान अपने क़द से भी छोटे
कोई इंसान अपने क़द से कुछ ऊँचा भी मिलता है

मुसीबत यह कि मिल जाए अगर पहचानना मुश्किल
बुरे मिलते हैं अकसर, आदमी अच्छा भी मिलता है

कोई पागल नहीं जो हाथ काले कर रहा हूँ मैं
मियाँ इस कोयले की खान में हीरा भी मिलता है

तुम अपनी उँगलियों को राख से बाहर रखो प्यारे
हमेशा राख की ही तह में अंगारा भी मिलता है

'मयंक' उसकी जबाँ लगती है बेहद सख़्त लोगों को
मिज़ाज उसका कभी लोगों को लचकीला भी मिलता है

¼185½

बचे हैं तो बचाएगी हमें तक़दीर कितने दिन
छुपा कर हम रखेंगे म्यान में शमशीर कितने दिन

हमारे हौसले, हिम्मत किसी दिन जुट ही जाएंगे
गुलामी की रहेगी जिस्म पर ज़ंजीर कितने दिन

सिकंदर सारी दुनिया जीतने निकला तो था लेकिन
नई दुनिया के जो बनते हैं आलमगीर कितने दिन

हुकूमत की सभी चालें उलट ही जाएंगी प्यारे
हमारे सामने आएगी टेढ़ी खीर कितने दिन

अकेला हो तो मुँह भर दें, मगर हैं सैकड़ों कुत्ते
चला पाएगा अब एकलव्य इन पर तीर कितने दिन

सुनो मुद्दत हुई, अब कान अपने पकने वाले हैं
सुनेंगे जहर में डूबी हुई तक़रीर कितने दिन

'मयंक' अब हर सभा में चीर हरता है दुशासन जब
बढ़ाएँगे कन्हैया द्रौपदी का चीर कितने दिन

'मयंक' और उनकी शायरी के बारे में अदीबों की राय

- 'मयंक' ने फ़िरक़ा वाराना हम आहंगी और क़ौमी यकजहती के शऊर को फरोग़ देने में नुमाया ख़िदमत अंजाम दी है ।

- असीर बुरहानपुरी

- के.के. सिंह 'मयंक' एक मुख़लिस इंसान और सच्चे शायर हैं ।

- मख़्मूर सईदी

- 'मयंक' साहब की ग़ज़लें आईनासाज़ी करती हैं और लोगों की बसीरत को ताबानी अता करती हैं ।

- प्रो. महमूद इलाही

- 'मयंक' की शायरी ताज़ा हवा के झोंके से कम नहीं ।

- मुहाफ़िज़ हैदर

- क्लासिकी शायरी से शग़फ रखने वालों के लिए दीवान-ए-'मयंक' एक खुशगवार तोहफ़ा है ।

- शीन-काफ़-निज़ाम

- 'मयंक' ने हक़ीक़त को अपनी शायरी का उनवान बनाया है ।

- डॉ. महमूदुल हसन उस्मानी

- मयंक ने दीवान की रिवायत को फिर ज़िंदा करने की कोशिश की है ।

- प्रो. अहमर लारी

- 'मयंक' साहब का इतना शौक़, इतना ज़ौक़, इतनी लगन और उर्दू शायरी इस दरजा मोहब्बत काबिले सताइश भी है और क़ाबिले तारीफ़ भी ।

- स्व. कैफ़ी आज़मी

- कल का क़ैस अगर आज ज़िंदा है तो आज का मयंक कल ज़िंदा रहेगा ।

- कालिदास गुप्ता 'रज़ा'

- के.के. सिंह 'मयंक' मुहब्बतों की ज़बान और ख़ूबियों के बयान का ख़ूबसूरत शायर है ।

- बेकल उत्साही

- 'मयंक' की शायरी कबीर और नज़ीर की ज़मीनों का छूटा हुआ हिस्सा है ।

- निदा फाज़ली

- 'मयंक' साहब मनमोहकता के पैकर खुलूस के सागर और दिल के क़लन्दर हैं।

- वसीम बरेलवी

- 'मयंक' अपनी तैयारी कला और अपने अन्दाज़े फ़िक्र की बदौलत हिन्दोस्तान के गोशे-गोशे में जाने वाला नाम है ।

- बशीर बद्र

- 'मयंक' साहब का दीवान वाक़ई अदब में एक मख़सूस पहचान बनाएगा ।

- गणेश बिहारी 'तर्ज़'

- मयंक साहब को ग़ज़ल के असलूब और आहंग की बहुत अच्छी वाक़फीयत है।

- बी.ए. बहादुर 'महशर' बरेलवी

- उर्दू की नातिया शायरी की तारीख़ में 'मयंक' का ऊँचा मक़ाम होगा ।

- सुलेमान अतहर जावेद

- क्लासिकी शायरी की सभी ख़ूबियां 'मयंक' साहब के क़लाम में पाई जाती हैं ।

- एहतेशाम अख़्तर

- 'मयंक' मुख़्तलिफ़ रंग-जो-आहंग का शायर ।

- मलका नसीम

- कम लफ़्ज़ों में बहुत कहना मयंक के फ़न की पहचान है ।

- मंजूर हाशमी

- मज़हबे इंसानियत का अलम बरदार सेहतमंत कदरों का मुहाफिज़ मुबालग़ा आराई से मुस्तसना शायर मयंक ।

- डॉ. निगार अज़ीम

- उर्दू शायरी के सेकूलर किरदार की वकालत करने वाले शुअरा की फ़ेहरिस्त का एक नाम के.के. सिंह 'मयंक' ।

- डॉ. जावेद नसीमी

- 'मयंक' एक दर्दमंद और हस्सास शायराना ज़हनो दिल क मालिक हैं ।

- डॉ. शाहिद हुसेन

- 'मयंक' साहब ने शायरी में तसव्वुफ़ के पहलू को बखूबी उजागर किया है ।

- बिस्मिल नक़्शबन्दी

- 'मयंक' साहब की शायरी में हुब्बुलवतनी कूट-कूट कर भरी हुई है ।

- दर्द होशियार पुरी

- 'मयंक' की शायरी राइज ख़ानाबंदियों में तक़्सीम नहीं होती ।

- प्रो. जगन्नाथ आज़ाद

- 'मयंक' साहब दरिया-ए-फ़िक्र में बहते हैं, बड़े पते की बात करते हैं ।

- प्रो. ज़फर अहमद निज़ामी

- दीवान-ए-मयंक में मयंक साहब की आलिमाना सलाहियतों का तफ़सीली तआर्रुफ़ होता है ।

- डॉ. राहत इन्दौरी

- खुशदिल, खुशफिक्र, खुशआहंग, खुशआवाज़, के.के. सिंह 'मयंक' ।

- मुमताज़ राशिद

- 'मयंक' साहब बड़ी शानो-शौकत के साथ मुशायरे में आते हैं और छा जाते हैं।

- प्रो. क़ासिम इमाम

- 'मयंक' साहब की शायरी की सबसे ज़ियादा ख़ास बात तो यह है कि उनके यहाँ बहुत ही आसान, सुबुक और शीरीं अलफ़ाज़ का इस्तेमाल हुआ जिसे आसानी के साथ सब लोग समझ सकते हैं ।

- प्रो. मलिक ज़ादा 'मंजूर अहमद'

- 'मयंक' साहब के शेरों में उर्दू शयरी के रंगे-तग़ज़्ज़ुल (एक आवश्यक रूमानीपन) और कैफ़ियत (भावमयता) के जगह-जगह दर्शन होते हैं ।

- 'ज़हीर' कुरेशी

- 'मयंक' जी ने अपनी ग़ज़लों में अछूते प्रयोग किए हैं । एकदम नये टोटके का प्रयोग... अक्सर लगा कि मैं ऐसा क्यों न कह पाया ।

- अशोक 'अंजुम'

- 'मयंक' जी की शायरी में हर क़दम पर ज़िन्दगी की पदचाप सुनाई देती है। उनके अशआर जहाँ वर्तमान का आईना हैं, वहीं भविष्य की धरोहर भी ।

- डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'